रसिक दोउ निरतत रंग भरे।
रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे।।
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे।।

जयति लाड़िली मोर सतत पिय को सुख दानी ।
जय जय श्री मैथिली मंजु मूरति रस सानी ॥४८॥
जयति युगल रस केलि कला भीने सब परिकर ।
"सीताशरण" अधार जयति जय जय उदार तर ॥४९॥
जयति युगल सरकार काहिं रस वर्द्धन हारे ।
"सीताशरण" हमार जयति जय प्राण अधारे ॥५०॥

दो०–जय जय जय सिय स्वामिनी, जय जय नृपति कुमार ।
जय जय प्रिय परिकर निकर, 'सीताशरण' अधार ॥

इति श्री युगल रहस्य माधुरी विलासे मकर श्रीराम रासे
"सीताशरण" सुमति प्रकाशे यक्ष कन्या रास प्रकरणम्
चतुर्दशोऽध्यायः सम्पूर्णम् भवतु ।

* पंचदशोऽध्यायः *

॥ कुम्भार्के नागकन्या रास प्रकरणम् ॥

छन्दरोलाः—

सुन्दर तर श्रृंगार सजीं प्रिय रूपवती अति ।
पूर्ण अवस्था युक्त प्रेम पूरित निर्मल मति ॥ १ ॥
तिनको अर्पण कियो सुधा सम सुभग भोग वर ।
पावत प्राण अधार परम रिझवार हर्षि उर ॥ २ ॥
सुखद सरस सुरधेनु कल्पतरु सरिस शीलयुत ।
सुन्दर स्वाद समेत अमित व्यंजन अति अद्भुत ॥ ३ ॥
पावत परम प्रमोद पगे मैथिली सङ्ग पिय ।
लहतमहा सुखस्वाद सखिन संयुत सुहृद हिय ॥ ४ ॥

अचवन करिलहिपान अतर माला प्रिय दम्पति ।
मणिमय महल विचित्र मध्य विलसत सतसम्पति ॥ ५ ॥
तहँ मणिमय पर्यङ्क परमसुन्दर मनभावन ।
तापर स्थित भये प्रियायुत रस सरसावन ॥ ६ ॥
रवि को अतिसय शीघ्र कुम्भ पर स्थापित कर ।
मदनै आसन दियो मकर पर रूप रसिक वर ॥ ७ ॥
मकर राशि को त्याग सूर्य जब गये कुम्भ पर ।
तुरतै काम सिहाय मकर पर बैठा मुद भर ॥ ८ ॥
तब मैथिली समेत सुमणि मय कोठें ऊपर ।
दुग्ध फेन सम सुभग सुप्रिय पर्यङ्क कान्तिकर ॥ ९ ॥
तामधि विलसत लाल बिबिध विधि भरे विनोदा ।
प्रियाप्रेम परतन्त्र लहत हिय परम प्रमोदा ॥१०॥
अति मनहर मुखचन्द्र भुजग सम सरस पीन वर ।
भुजा परम कमनीय मन्द हँसि धरे सिया गर ॥११॥
वक्षस्थल अति ललित परम आयत कपाट सम ।
पीन अंश कटि शूक्ष्म नयन सुख अयन सुअनुपम ॥१२॥
काजरयुत कमनीय रसद विस्त्रित मनभावन ।
मनहुँ अरुण राजीव परम सुषमा प्रगटावन ॥१३॥
पग ते शिर पर्य्यन्त सरस सौरभ मय सुठि तन ।
नृप लक्षण सम्पन्न नाग कन्यन सों शुचिमन ॥१४॥
बोले सुषमा सदन मदन मद हरन रसीले ।
जीवन प्रानअधार रसिक वल्लभ रिझवीले ॥१५॥

हे प्रिय सखी समूह मास फागुन मन भावन ।
प्रिया सहित तुम सबहिं हृदय में मोद बढ़ावन ॥१६॥
किन्तु मदन मद भरो सहित रति लहि मनोर्थ वर ।
अपनो बाहन मकर पाय रबि से हुलास भर ॥१७॥
पुष्प सु वाण चढ़ाय पाय रति की सहाय वर ।
लीनो सब जग जीत हृदय में अति प्रमोद भर ॥१८॥
हमको जीतन चहत करै ऐसी कुटिलाई ।
ममकृत निज उपकार सर्वथा गयो भुलाई ॥१९॥
याको बाहन मकर छीन रबि कीन सबारी ।
तब यह आयो शरण दीन बनि कहा पुकारी ॥२०॥
हे आश्रित दुख हरण भानु मम बाहन छीना ।
मकरै मोसे छीन आपनो बाहन कीना ॥२१॥
यहि को बाहन मकर भानु से दीन दिवाई ।
पर यह अतिसय कुटिल कुटिलता रहा दिखाई ॥२२॥
कुटिलन केर स्वभाव सदा याही सम जानिय ।
गिनत न पर उपकार यही अपने मन मानिय ॥२३॥
मम उपकार भुलाय करन अपकार हमारो ।
चाहत यह अति तुच्छ करै गो काह बिचारो ॥२४॥
जानि हमैं असहाय चहत जीतन यह हम को ।
हम मैथिली समेत सहायक करिहौं तुम को ॥२५॥
भृकुटि धनुष कमनीय नयन के प्रिय कटाच्छ वर ।
तिन को वाण बनाय सकल विधि निज रच्छा कर ॥२६॥

मदनै जीत अवश्य आपनो दास बनइहौं ।
याकी सब कुटिलता पलक में धूरि मिलइहौं ।।२७।।
यदि तुम सब यह कहो काम सब भाँति प्रवल अति ।
याके प्रवल सहाय जीतिहैं तुमहिं विमल मति ।।२८।।
तो ऐसा न कदापि काम कबहूँ हम काहीं ।
जीतन में न समर्थ होय निश्चय मन माहीं ।।२९।।
मानो तुम सब सदा एक कारण यहि माहीं ।
वाकी एक सहायरती तिय दूसर नाहीं ।।३०।।
हमरी परम सहाय करन हारी तुम सब प्रिय ।
सुन्दरता रस सिन्धु महारमनीय सुहृद हिय ।।३१।।
केवल रति पति काम महीपति सुत हम आहीं ।
याते सखि हम और मदन की समता नाहीं ।।३२।।
वह रति केर प्रभाव जीति जग स्ववश बनावत ।
हमकों परमसहाय सहस्रन यूथ जनावत ।।३३।।
अतएव सकल प्रकार परम रक्षित तुम सब से ।
हरिहै मदन अवश्य जीत पइहै नहिं हम से ।।३४।।
जिनकी पाय सहाय कामने जग को जीता ।
सो मम निकट समूह अवसि मैं होव अजीता ।।३५।।
इनकी पाय सहाय जितौं मैं त्रिभुवन काहीं ।
सुमन धनुष धर काम कदा मोहिं जितिहै नाहीं ।।३६।।
मैं तेहि जितिहौं अवसि अगर मम शरण न आयो ।
जग रक्षक सर्वदा निगम आगम मोहिं गायो ।।३७।।

अतः हमारी प्रिया मैथिली रूप उजारी।
प्राणहुँ ते प्रिय मोहिं मधुर तर अति सुकुमारी ॥३८॥
हम दोउ के सुख हेतु हृदय को आनँद कारी।
चित कर्षक अति सरस मधुर तर प्रिय मनहारी ॥३९॥
सुरन प्रशंसित सतत सरल अच्चर पदादि वर।
भिन्न भिन्न हों शब्द सुभग सङ्गीत सु रुचि कर ॥४०॥
मिलि तुम सब सखि बृन्द करो प्रारम्भ मोद भर।
जो सुनि श्रीमैथिली सुखी होवैं विशेष तर ॥४१॥
यथा प्रथम धनरासि मकर पर रहे भानु वर।
तब अति लघु दिन रहे रही तस प्रभा मन्द तर ॥४२॥
पुनि जब तजि ये रास गये रबि कुम्भ राशि पर।
अब दिन अति बिस्तार भये अतिसय प्रकाश कर ॥४३॥
तैसे रति सम सुभग आप सब रूप उजारी।
काम सदृश प्रिय करनि सबनि मैं करौं सुखारी ॥४४॥
सो मैं बन्धन विवश कर्म अरु धर्म केर पर।
निज मुग्धत्व बिसार बँधौं सर्वथा सोच भर ॥४५॥
तुम सब को शुचि नेह नवल नित मम पद माहीं।
मो कहँ सर्वस मानि भजत आशा कछु नाहीं ॥४६॥
तैसेहि मैं सब भाँति सतत प्रिय करौं तुम्हारा।
तुम से होत बियोग चणहु दुख होत अपारा ॥४७॥
किन्तु मातु पितु केर प्रवल आयसु बन्धन वर।
अपर अनेकन कर्म धर्म बन्धन कठोर तर ॥४८॥

पालन हित मैं जाउँ तुमहिं दुख होत अपारा ।
तुम्हरी गति नहिं अन्य सकृत एक हमहिं सहारा ॥४९॥
याते मिलि तुम सकल परम रस भरित मधुर तर ।
प्रगटो अस सङ्गीत सुभग वाणी से सुख कर ॥५०॥
जाको सुनि मैं श्रवण अपनपौ भान भुलावौं ।
कर्म धर्म परिवार स्वजन सब को बिसरावौं ॥५१॥
पावौं परमानन्द सदा तुम्हरे सँग माहीं ।
अस अनूप सुठि रास दिखावहु तुम हम काहीं ॥५२॥
तुम्हरे सुठि सङ्गीत सुधा को अति प्रिय मानौं ।
कर्म धर्म मर्याद केर सुख लघु तर जानौं ॥५३॥
तजि तुम सब मोहिं भूलि आन की याद न आवै ।
दीजै अस सुठि स्वाद भाव जग केर न भावै । ५४॥
सुनि पिय के इमि बचन रचन रस रङ्ग भरित अति ।
लक्ष्मी सदृश प्रभाव कान्ति मय अङ्ग विमल मति ॥५५॥
पुण्यातमा प्रवीण अखिल ऐश्वर्य भोग्य वर ।
भोक्तातिन सब केर प्रेम पूरित प्रमोद कर ॥५६॥
पिय आयसु शिरराखि परम अनिवार्य जानि जिय ।
वन्दे चरण सनेह सहित सादर हुलास हिय ॥५७॥
पुनि पिय परम प्रवीण प्रेम पालक प्रिय नागर ।
भूषण बसन अनेक भाँति तिन को छबि सागर ॥५८॥
दीने जीवन प्रान रास के योग्य सु रुचि कर ।
अति शोभा सम्पन्न परम प्रिय सुखद कान्ति कर ॥५९॥

करि धारण तिन काहिं प्रेम पूरति सब वाला।
नागसुतनि को यूथ बचन इमि कहे रसाला ॥६०॥
हे प्रिय कान्त कदापि न यह सामर्थ हमारी।
निज कुशलता दिखाय तुमहिं करि सकैं सुखारी ॥६१॥
हे हृदयेश उदार स्वभाविक जाति हमारी।
विषम दाँत युत होय क्रोधमय वृत्ति सदारी ॥६२॥
विषम जाति में जन्म दीन हम काहिं विधाता।
शुभगति दुर्लभ हमनि सतत सब को दुख दाता ॥६३॥
कुदर्शनीय सदैव तथा यह देह हमारी।
अतएव हे करुणेश कृपा अति भई तुम्हारी ॥६४॥
जो तुमने प्राणेश लीन मो कहँ अपनाई।
निज रस रङ्ग रँगाय दियो सुख स्वाद सदाई ॥६५॥
हे अवनीश कुमार मातु कौशल्या नन्दन।
हम किमि करैं प्रसन्न स्वगुण से हे जग वन्दन ॥६६॥
स्वयंहि होत प्रसन्न सदा आश्रित जन पाहीं।
हम सब में न समर्थ करैं निज वश तुम काहीं ॥६७॥
प्रत्युत हे प्रिय चन्द्र सरिस तव रूप उदारा।
सेवत हम बहु काल विते सुख स्वाद अपारा ॥६८॥
पायो हे हृदयेश रसिक चूड़ामणि छवि धर।
अङ्ग कान्ति कमनीय सच्चिदानन्द मधुर तर ॥६९॥
शरणागत सुखदैन अरुण राजीव विलोचन।
"सीताशरण" अधार दोष दुख हर भवमोचन ॥७०॥

चन्दन सम सुठि सुभग सरस प्रिय अङ्ग तिहारो ।
हम सब करि स्पर्श लह्यो सुख स्वाद अपारो ॥७१॥
याते हम सब केर तीव्र विष शान्त भयो अब ।
मिटेव कुभाव सुभाव वन्यो पिय कृपा भई तब ॥७२॥
अमृतमय सब अङ्ग भये हे नाथ हमारे ।
लहि तवकृपा कटाक्ष प्राणवल्लभ सुकुमारे ॥७३॥
प्रायः हमरी जाति तापके शान्त करन हित ।
हरि चन्दन बहु काल करति सेवन प्रमुदित चित ॥७४॥
तब नाशत तन ताप हृदय में शान्ति लहत अति ।
ऐसेहि जीवननाथ सुनिय रसिकेश विमल मति ॥७५॥
हरि चन्दन सम सुभग सरस प्रिय अङ्ग तिहारो ।
याहि करत स्पर्श मिटेव विष ताप हमारो ॥७६॥
पाय रहीं अति शान्ति कृपा कण लहत तिहारी ।
हे उदार कमनीय प्राण जीवन वलिहारी ॥७७॥
जब बोलीं इमि बचन विमल विधु बदनी वाला ।
सुन्दर सुखद सुस्वाद भरित प्रिय मधुर रसाला ॥७८॥
पुनि भरि हिय में मोद नाग कन्या सुकुमारी ।
रासस्थली मझार सकल प्रविशीं मनहारी ॥७९॥
जहाँ अनेक प्रकार विविध शोभा शोभित वर ।
कोमल सुखद मृदङ्ग आदि प्रिय शब्द मधुर तर ॥८०॥
रमणीकता समेत बजत वरवाद्य विविध बिधि ।
विपुल नवल नायिकन केर प्रिय शब्द सुरसनिधि ॥८१॥

अति शीघ्रता तरङ्ग सरिस आनन्द प्रवाहा ।
रासस्थल में रहा चलत सखि गणन उछाहा ॥८२॥
परम प्रकाश निधान लसत रघुनन्द चन्द जहँ ।
देन तिनहिं सुख स्वाद नाग कन्या पहुँचीं तहँ ॥८३॥
निज सुमधुर मृदुगीत नृत्य करि तदनुकूल वर ।
प्रगटैं भाव अपार परम मनहर कटाक्ष कर ॥८४॥
बहु प्रकार कमनीय काव्य पिङ्गल प्रसङ्ग युत ।
शेशादिक कविश्रेष्ठ रचित मंजुल अति अद्भुत ॥८५॥
मनहर ललित प्रबन्ध छन्द अति सरस मधुर तर ।
गावहिं नाग कुमारि प्रेम पूरित प्रमोद भर ॥८६॥
नृप किशोर चितचोर मैथिलीयुत गुण गण भल ।
गावत सखि हर्षाय कला कुशला सु केलि कल ॥८७॥
करहिं मन्द मुसुकाय पाय पिय प्यार प्रेम पगि ।
पावहिं परमानन्द प्रेम पूरित सु कण्ठ लगि ॥८८॥
एक सखी सुख पाय नटति अतिसय उमङ्ग भर ।
प्रगटति प्रिय सङ्गीत श्रवण सुख प्रद प्रमोद कर ॥८९॥
नागकुमारिन केर गीत मृदु मधुर सरस तर ।
हावभाव संयुक्त कलित कोमल कटाक्ष वर ॥९०॥
सुनि लखि श्री मैथिली गीत उज्वल रस मय प्रिय ।
पाईं परमानन्द ललकि लागीं पिय के हिय ॥९१॥
जिनकी कीरति कलित शास्त्र श्रुति समीचीन वर ।
पुरुष कथैं दिन रैन धर्म धारक प्रवीण तर ॥९२॥

तिन पिय के लगि कण्ठ मधुर रस सिन्धु समानी ।
प्रेमावेश विशेष रसिक मणि प्रिय पटरानी ।।९३।।
तब बोले श्री सूत सुनिय शौनक मुनीश वर ।
नाग कुमारिन केर गान सङ्गीत मधुर तर ।।९४।।
सुनि लखि तिनको भाव हाव मंजुल कटाक्ष प्रिय ।
मन गुनि गुण गण विमल परम आनन्द लहत हिय ।।९५।।
भये चेतना रहित किन्तु पुनि धीरज धरि के ।
सावधान करि चित्त रास निरखत मुद भरि के ।।९६।।
गन्धरवन से प्राप्त सरस सङ्गीत कियो जिन ।
चपल स्वभाविक जाति मीन इव सावधान तिन ।।९७।
राघवेन्द्र बल पाय अभय हो नाग कुमारी ।
गरुड़हु को भय त्याग गान करि नटत सुखारी ।९८।।
पुनि पगि अति अनुराग प्रेरणा पिय को करहीं ।
आवहु हमरे सङ्ग नटिय यों कहि सुख भरहीं ।।९९।।
यदपि निशा को समय तदपि तम तनक न भाशत ।
मणिमय मण्डप रत्न जटित प्रतिभा प्रतिकाशत ।।१००।।

दोहाः—स्वयं प्रकाश स्वरूप अति, मण्डप जहँ सुठि रास ।
करहिं नाग कन्या भरीं, "सीताशरण" हुलास ।।1।।

हरन निविड़तम प्रवल प्रात कालीन भानु सम ।
शिर मधि धारण किये प्रकाशित रत्न सु अनुपम ।। १ ।।
तिनको विमल प्रकाश पुंज छावत चहुँ ओरी ।
बिन प्रयास तम मिटत नटत सब प्रेम विभोरी ।। २ ।।

प्रगटत परमानन्द जाहि लखि अपर सखी गन ।
देख देख सुख लहत सरस चित अति प्रसन्न मन ।। ३ ।।
कोइ विधु बदनी वाल विमल पिय वदन निहारी ।
तजि निज शान गुमान ललन पर भइ वलिहारी ।। ४ ।।
मन्द मधुर मुसुकान युक्त पिय मुख मयंक बर ।
अति सुन्दरता सींव दीर्घ लोचन प्रमोद कर ।। ५ ।।
कजरारे अति सरस मधुरतम अमल कमल सम ।
भृकुटि कुटिल कमनीय परम मन हर अति अनुपम ।। ६ ।।
बिकशित वनज समान विशद विस्त्रित रस पूरे ।
लखि सो नवनायिका नेह नमि भाव बिभोरे ।। ७ ।।
करि कटाक्ष कमनीय प्राण वल्लभ के कर में ।
ताली देकर हँसी फसी पिय रूप सुघर में ।। ८ ।।
यहि बिधि होत सुरास लखे जब सकल नाग गन ।
तब अस कियो विचार हमारी कन्या शुचि मन ।। ९ ।।
सिय रघुवर सुख हेत रास कर रहीं भाव भर ।
हमरेउ यह कर्त्तव्य करहिं सेवा उदार उर ।।१०।।
यह शृङ्गार अपार सु रस पूरित सुठि सागर ।
याको वर्द्धन हेत मैथिली विमल सुधाकर ।।११।।
तिनहिं देन आनन्द हेत हम सब सेवकाई ।
कर लेवैं भल भाग वन्यो अस अवसर आई ।।१२।।
कर यहि भाँति बिचार नाग सब चढ़ि बृक्षन पर ।
निज शिर की मणि प्रवर प्रगटि कीनो प्रकाश वर ।।१३।।

पुनि दीनी जो धूप नाग कन्यन सुख पाई।
वाको धूम सुगन्ध भरित उड़ि रहा सुहाई ॥१४॥
जो मानवन अप्राप्य सदा सो रास मझारी।
पूरि रहा सब ओर गन्ध लहि सकल सुखारी ॥१५॥
पुनि उड़ि सो शुचि गन्ध अखिल उपवन में छाई।
तहाँ न सकी समाय गगन मण्डल में जाई ॥१६॥
सो सुठि सौरभ पाय व्योम प्रमुदित अपने मन।
परम प्रकाश स्वरूप रसिक बर पर पंकज गन ॥१७॥
बर्षावत बहु बार विपुल विकशित नक्षत्र वर।
लखि सो चरित रसाल नाग गन प्रमुदित निज उर ॥१८॥
एक टक रहे निहार बदन को विटपन माहीं।
सब विधि लिये छिपाय तिनहिं कोइ देखत नाहीं ॥१९॥
विकशित व्योम विचित्र विमल तारागण सुठितर।
प्रगटत परम प्रकाश प्रभा पूरित पृथ्वी पर ॥२०॥
श्री वशिष्ठजा सुतट निकट विहरत विनोद युत।
करत केलि कमनीय कला कल कुशल सु अद्भुत ॥२१॥
सागर की अति प्रिया परम पावन रघुवर पग।
परसि सु पावन होत पुलिन पर रत्न जगामग ॥२२॥
करत प्रकाश महान विमल मुक्तादिक सुठि तर।
तहँ करि बिपुल बिहार विशद रस लहत रसिक बर ॥२३॥
लखि यह रास बिलास कहत सब देखन हारे।
हे उदार कमनीय कीर्ति धर राजदुलारे ॥२४॥

शरद पूर्ण विधु विमल प्रभाहर मुख मयंक वर ।
पूरित प्रेम पियूष परम प्रतिभा प्रकाश कर ॥२५॥
तव यह रास रसाल सुधा सागर अति दुर्लभ ।
अखिल विश्व को रहा तुम्हारी कृपा अति सुलभ ॥२६॥
सकल जगत को भयो आप में यह उदार गुन ।
सबको भा अति सुखद चराचर परम मुदित मन ॥२७॥
सो क्या यह पियूष पिया चन्द्रमहुँ मोद भर ।
जो नित मर्दित रहत राहु से भरो शोक डर ॥२८॥
निज व्याकुलता त्याग आज सोउ रास मझारी ।
परम अभय रस पाय पूर्ण तम लसत सुखारी ॥२९॥
पुनि सखि मण्डल मध्य देव तरु सुमन सु निर्मित ।
अतिसय सौरभ मुक्त स्वच्छ तर कारक विस्मित ॥३०॥
बैजन्ती वर माल किये धारण रघुनन्दन ।
लिये रत्नमय छड़ी एक कर पिय जग वन्दन ॥३१॥
अपर हस्त में एक दिव्य कल कमल सुधारे ।
नवल नायिकन मध्य लसत नटवर सुकुमारे ॥३२॥
मन्द मन्द मुसुकाय सबनि देवत आनन्दा ।
हृदयाकर्षण करत रसिक जीवन सुख कन्दा ॥३३॥
शिर पर दिव्य कीरीट रत्नमय पंच शिखर वर ।
विपुल सुमणि कृत रचित जड़ित हीरा प्रकाश कर ॥३४॥
छिटकत दिव्य अपार प्रभा पूरित सब ओरी ।
मनहुँ प्रभाकर प्रगटि कीन जग माहिं अजोरी ॥३५॥

जिनने शत्रु समूह बिनाश्रम सकल नसाये।
चरित पवित्र महान सुयश लोकन में छाये ॥३६॥
निशिचर निकर खरादि अग्निसमतिन नाशनहित।
अमल अपार अथाह अगम सागर इमि शुचि चित ॥३७॥
सो पिय सखिन मझार रासमण्डल में मुद भर।
श्री कौशल्यानन्द कन्द कोमल उदार उर ॥३८॥
नवल नायिकन नेह नमित हिय महल निवासी।
"सीताशरण" अधार प्यार अति भरे विलासी ॥३९॥
प्रीतम परम प्रवीण प्रेम पूरित प्रमोद प्रिय।
पूजत संतत काम बास करि सखियन के हिय ॥४०॥
पुनि बोले श्री सूत सुनहु शौनक मुनीश वर।
श्री रघुनन्दन केर रूप गुण अति उदार तर ॥४१॥
कहँ लों कहों बखान श्रवण जो सुनै रूप गुन।
एक गुणा हो जात काम बृद्धी ताके मन ॥४२॥
जो इनको ले देख दुगुण हो काम तासु उर।
यदि कोइ लेवे परश भाग्य शाली प्रमोद भर ॥४३॥
बढ़ै तीन गुण काम तासु हिय में अति भारी।
यदि हिय जायँ समाय बढ़ै तो व्यथा अपारी ॥४४॥
तेहि के हृदय मझार अमित गुण मदन व्यथा वर।
भर देवत चित चोर राजनन्दन विशेष कर ॥४५॥
देवत रति सुख स्वाद कदा जब केहु जन को पिय।
तब तेहि उर भर देत मदन वेदना विमल हिय ॥४६॥

कारण यही विशेष रती स्थाई से प्रिय ।
लेकर क्रमशः प्रणय परा होवत सु प्राप्त हिय ॥४७॥
वे विधु बदनी वाल रहित अन्तर पिय मूरति ।
निरखत रासमझार विघ्न बिन अति सुठि सूरति ॥४८॥
पावहिं परमानन्द प्रेम पूरित सब नागरि ।
भरीं विहार विनोद रूप गुण शील उजागरि ॥४९॥
स्थाई अनुराग केर उत्कृष्ट दशा लहि ।
पगीं पिया के प्यार एक एकन से यों कहि ॥५०॥
निर्हेतुकी कृपालु यही प्राणेश हमारे ।
पूरक मन अभिलाष राजनन्दन मनहारे ॥५१॥
बोलत कोउ वर वाम अहो हृदयेश रसिक वर ।
जावत कहाँ रसेश इधर आइये सु छवि धर ॥५२॥
अस कहि सखि केहु काहिं पकरि भुज में भुजडारी ।
गाढ़ालिङ्गन करति जानि तेहि रास विहारी ॥५३॥
प्रेमावेश विशेष परम आनन्द समानी ।
अतिसय भयो विमोह बुद्धि मन चित भ्रम सानी ॥५४॥
यहि विधि मदन मरोर उठत सखियन उर माहीं ।
मन बुधि चितअरु देह काम चोरेउ सब काहीं ॥५५॥
भईं भ्रान्ति वश सकल एक को एक परस्पर ।
प्रमुदित पान पवाय पाय तेहि करसे सुखभर ॥५६॥
पुनः एक के एक उदर को मर्दन करहीं ।
अरस परस दृगआँजि सु अंजन आनँद भरहीं ॥५७॥

बहुरि एक की एक भुजा मुख चरणन चुम्बत ।
पगि पिय के प्रिय प्यार परम रस वश सब हर्षत ॥५८॥
पुरुषन के प्रति करैं क्रिया जेहि भाँति वाम वर।
सकल सखी तेहि भाँति चेष्ठा करत परस्पर ॥५९॥
पुनि पुरुषन स्पर्श जन्य जो सुख वर वामा ।
पावहिं सोइ सुख स्वाद लहत सखि वृन्द ललामा ॥६०॥
कहन लगे श्री सूत सुनिय शौनक मुनीश वर ।
लखि यह विमल विचित्र चरित निश्चयभा मम उर ॥६१॥
श्री रघुनन्दन केर रूप प्रतिनिधि केहु मानी ।
करै प्रेम जेहि भाव अवसि पावइ मैं जानी ॥६२॥
लहै वही सुख स्वाद लहत जो सिय वर तन में ।
दृढ़ निश्चय यह सिद्ध न मानिय संसय मन में ॥६३॥
लखि यह लीला ललित ललन लोने ललनन की ।
अट्टहास करि मुदित कपट कल केलि कलन की ॥६४॥
अस भारी भ्रम भयो कदा कोउ सकै न टारी ।
वदत विमल वर बचन नृपति सुत रास विहारी ॥६५॥
भले मिले हृदयेश प्यार पगि हृदय लगाओ ।
पीकर अधर पियूष प्रेम युत इनहिं पियाओ ॥६६॥
सुनि पिय के इमि बचन कूट युत नाग कुमारीं ।
अतिलज्जित शिर नमित मूद दृग कमल सुखारीं ॥६७॥
पगि पिय के अति प्यार चरण में लोटन लागीं ।
पावहिं परमानन्द प्रेम पूरित बड़ भागीं ॥६८॥

करि कल केलि कलोल कामिनी सावधान सब ।
भईं परस्कर लगीं करन यहि विधि विचार तब ।६९।।
बोली कोउ वर बाल अहो हे सखिगन सारी ।
यह माया अति अगम कष्ट करि कोउ न पारी ।।७०।।
पावइ याको कदा करी निश्चय यह प्यारे ।
यद्यपि सीधे सरल मृदुल हिय राजदुलारे ।।७१।।
बोलत बचन विशेष प्यार पूरित अति प्रिय कर ।
तद्यपि टेढ़ी चाल चलत हृदयेश सु छबि धर ।।७२।।
कहत परस्पर यही बुद्धि से निश्चय करहीं ।
स्वसुख लाभके लोभ सकल हिय आनँद भरहीं ।।७३।।
पुनि मिलि सब वर वाम मैथिली चरण वन्दि कर ।
करत विनय कर जोर विमल वर बचन रचन तर ।।७४।।
हे मम जीवनमूरि कृपामयि राजकिशोरी ।
प्रीतम प्रेम विभोर सतत अतिसय रस बोरी ।।७५।।
हम सब मिलि पियसङ्ग करब जो केलि कलित वर ।
अथवा जो कछु कहैं बचन इनसे विनोद भर ।।७६।।
सो लखि मम धृष्टता चित्त में आप न लाइय ।
अज्ञ जानि हम सबनि मोद मन में अति पाइय ।।७७।।
कहि प्यारी से बचन नागकन्या वर वामा ।
करि शुचि मादक पान सकल मन हरन ललामा ।।७८।।
प्रेम नशा जब चढ़ेउ आय सब पिय के पासा ।
भईं परम उन्मत्त सकल हिय भरीं हुलासा ।।७९।।

अनुचित उचित विचार त्यागि बोलहिं वरवाला ।
तजि लज्जासङ्कोच परम प्रेमान्ध रसाला ॥८०॥
बोलीं सब एक सङ्ग अहो हे धूर्तन स्वामी ।
तिन में सर्व प्रधान आप निज स्वारथ गामी ।८१॥
सीधे सरल स्वभाव वान हितकारिन माहीं ।
देखि परत नहि कदा तहाँ तव गिनती नाहीं ॥८२॥
पलक मात्र सौहार्द प्रगटि अति प्रीति पात्र वन ।
विनगथ सबहिं बिसाय मोद पावत अपने मन ॥८३॥
हम सब लखि तव प्यार आपनो सर्वस वारी ।
तुमको सर्वस मानि रहत निशिदिन बलिहारी ॥८४॥
पर हे वंचक स्वामि आप कबहूँ अति रागी ।
बनत जनेश कुमार कदा अतिसय वैरागी ॥८५॥
कबहुँ त्यागि सर्वत्र शत्रु अरु मित्र भाव वर ।
देवत हमनि सलाह मनहिं सब से उदास कर ॥८६॥
वाह चतुरचित चोर चपल हम सब ने जाना ।
एक रस नहीं स्वभाव आपको रहत सुजाना ॥८७॥
जो नायिका प्रवीण करै तुम्हरो विश्वासा ।
सोऊ जानि स्वभाव आपसे होय उदासा ॥८८॥
करै न फिर विश्वास कदा केहु भाँति तिहारो ।
ऐसोइ निश्चय करति सर्वथा चित्त हमारो ।८९॥
जाना हम सब प्रथम कि श्री महराज कुँवर वर ।
पितु के प्राण समान सु प्रिय सब भाँति मोद कर ।९०॥

सबहिं सुखद जे मनुज सबनि में आप श्रेष्ठ तम ।
रक्षक सब के सतत काल त्रय में अति अनुपम ॥६१॥
पर जाना अब सत्य चाल अवरेव तिहारी ।
करत स्वेच्छा चार सर्वदा रास बिहारी ।६२॥
सुभग नायिकन मध्य महा माया फैलाई ।
लेवत सबनि फसाय सिखी ऐसी चतुराई ॥६३॥
जे स्वतन्त्र तर पुरुष आपही उनके नायक ।
वन्दत ते सब तुमहिं आप सब विधि सब लायक ।६४॥
लाज न लागति तुमहिं यन्त्र अरु मन्त्र चलाई ।
करत नायिकन स्ववश महामाया फैलाई ॥६५॥
जे पुरुषत्व विहीन नपुंसक संज्ञा जिनकी ।
जादू मन्त्र चलाय ठगैं ललनन गति उनकी ॥६६॥
पर हे धर्त नरेश आप की माया भारी ।
भोली भाली तियन स्ववश करि राखन हारी ॥६७॥
जिनको सुभग शरीर परम सौन्दर्य सिन्धु सम ।
काम कला कल कुशल शील गुणनिधि अति अनुपम ॥६८॥
तिनहिं करै किमि विवश आपकी यह बड़ माया ।
जो सहवासी सतत भेद जेहि ने भल पाया ॥६९॥
उत्तम कुल उद्भवा पराक्रम युक्त ललामा ।
माया धारिन देखि दूरि ते करति प्रणामा ॥१००॥

दोहाः–पुनि अति उत्तम कुलवती, अनुपम नारि ललाम ।
पाई "सीताशरण" जेहि, पूरक सब मन काम ॥ २ ॥

सकल कला गुणखानि प्रेम पूरित उदार अति ।
पिय की प्राणाधार परम मन हरन विमल मति ।। १ ।।
ऐसी जाकी सुतिय भाग्य शाली अति सो नर ।
परमश्रेष्ठ से श्रेष्ठ मधुर मंजुल उदार तर ।। २ ।।
कहिये सो नर प्रवर दुष्ट माया में तत्पर ।
होय करन कर्तव्य कवन विधि हे सुजान वर ।। ३ ।।
यद्यपि पुरुषाकार आप को सुभग शरीरा ।
वदत न मिथ्या बचन वदन से अति मति धीरा ।। ४ ।।
ॐ शब्द अस बसत सतत तुम्हरे मुख माहीं ।
दान देव प्रिय लगत न देवै निकसत नाहीं ।। ५ ।।
पुनः दया अरु तेज शील निवसत तव नयनन ।
सुन्दर भुजा विशाल सतत प्रेमिन प्रद चयनन ।। ६ ।।
देखत हम भलभाँति अङ्ग तव रसमय सारे ।
सर्वैश्वर्य प्रपूर रूप गुण गण आगारे ।। ७ ।।
दिव्य सच्चिदानन्द कन्द दुख द्वन्द रहित अति ।
भरित महामाधुर्य परम मंजुल निर्मल मति ।। ८ ।।
देखन में अस लगत किन्तु हे मित्र सुखद वर ।
श्री जी के स्थान कमल दृग हे उदार तर ।। ९ ।।
यही एक बड़ बात आप में प्राण अधारे ।
दायक अतिसय खेद हमनि को दृगन सितारे ।।१०।।
हारीं हम सब वाल तर्क करि किन्तु सुछबि धर ।
जानि न पायो भेद रंच हू तुम्हरे हिय कर ।।११।।

करना बहु छल छन्द विपुल विधि बात बनाई ।
यही कठिन कुटिलता आपने हृदय बसाई ॥१२।
कहिये जीवन प्राण आपने निज मन माहीं ।
यह कर्तव्य कठोर किये धारण या नाहीं ॥१३॥
क्या बिचारि हिय माहिं छद्म को बास करायो ।
विमल हृदय को सुयश अखिल जग में फैलायो ॥१४॥
महिमें लघुसे महत सिन्धु पर्यंत अगम थल ।
जगमें जे विख्यात जिनहिं जानत सब कोइ भल ॥१५॥
सोउ तव हृदय समान अगम नहिं परत दिखाई ।
अति अगाधता सींव थाह कोइ सकै न पाई ॥१६॥
अवलोकत तव हृदय सकल लागत अति लघु तर ।
डूबि रहे जेहि मध्य सुरासुर ब्रह्मा गिरिवर ॥१७॥
किन्तु आपके हृदय केर कोइ थाह न पावत ।
करत प्रयास महान अन्त में सब थकि जावत ॥१८॥
हम सब रहीं विचार निरखि तव हिय गहराई ।
धारण तुमको कियो उदर में जेहि हर्षाई ॥१९॥
वे आर्य्या अति पूज्य सुभग माता पिय तुम्हरी ।
श्री कौशल्या अंब जिनहिं पूजत हम सिगरी ॥२०॥
उनका हृदय अगाध थाह वाकी को पावै ।
जो पिय आप समान महा सागर प्रगटावै ॥२१॥
तब बोले श्री सूत सुनिय शौनक मुनि ज्ञानी ।
बोलत इमि वर वयन सकल सहचरी सयानी ॥२२॥

पियके रूप रसाल माहिं निज नयन लगाये ।
हो अतिसय कामान्ध प्रणय रस प्रबल बनाये ।२३।।
आनँद सुधा समुद्र माहिं उछलैं मद मातीं ।
मन्द मधुर मुसुकाय पिया को चित्त चुरातीं ।२४।।
पगि पिय के अनुराग कण्ठ में दोउ भुज डारी ।
खींचत अपनी ओर नवलनायिका सुखारी ।२५।।
पुनि बोले श्री सूत लखा शौनक मुनीश वर ।
जब सब नव नायिका परम लीलारस हिय भर ।।२६।।
पिय को निज निज ओर सकल खींचत हर्षाई ।
लीला लम्पट लाल लसत तब ललित लुनाई ।।२७।।
अलकैं परम प्रकाशमान झलकैं कपोल पर ।
अति चंचल हो रहीं कमल दृग बड़े अरुण तर ।।२८।।
शोभित सुषमा सदन मदनमद मथन रसिक वर ।
चतुर शिरोमणि लाल बैठि मणिमय चौरा पर ।।२६।।
गाढ़ालिङ्गन किये प्रियै सँग सखि रमणीयाँ ।
कामिनि काम कलोल कला कुशला कमनीयाँ ।३०।।
करन लगे सुठि रास नवल नायक रस सागर ।
रसस्वादी रस रूप रमण रति लम्पट नागर ।।३१।।
पुनि सखिमण्डल मध्य ललन मन, गरुड़, पवन को ।
दीनो बेग लजाय नृत्य दिखलाय सबन को ।।३२।।
नागकुमारिन मध्य नटत नटवर नागर वर ।
देवत परमानन्द सबै लपटाय लटकि गर ।।३३।।

उनकी जङ्घन आदि अङ्ग की ललित सन्धि वर ।
भेदन तिनको करत जीत सबको प्रवीण तर ॥३४॥
चतुर शिरोमणि श्याम परम अभिराम कान्ति धर ।
लहत मदन सुख स्वाद स्ववश करि अलिन मोदधर ॥३५॥
देत सुरति रस रमण स्वाद तिनको रसेश वर ।
पीवत प्रेम पियूष पियावत प्रियन प्यार भर ॥३६॥
केहु सखि के कच पकरि विरोरत हिय हर्षाई ।
चूमत सरस कपोल काहु के मोद समाई ॥३७॥
करत अधर रसपान काहु को कण्ठ लगाई ।
केहु के मृदु कर कंज मंजु चमत सुख पाई ॥३८॥
काहुहिं अङ्क बिठाय कंज कर धर गर माहीं ।
निरखत वर विधु बदन तृप्ति मानत मन नाहीं ॥३९॥
काहू के लगि कण्ठ अंश भुज धर मुसुकाते ।
करि कटाक्ष कमनीय तासु दृग दृगन मिलाते ॥४०॥
यहि विधि विपुल विनोद करत हिय भरे विलासा ।
देत मधुर सुख स्वाद सखिन को परम हुलासा ॥४१॥
करत विहार अपार नाग बालन सँग रघुवर ।
देवनहारे व्यथा उदर को कुच कठोर तर ॥४२॥
यहि मिस उनके कुचन करत मर्दन रस सागर ।
बोलत इमि वर बचन प्रेम पूरित छवि आगर ॥४३॥
हिय में पीड़ा देत होयँ गे कुच कठोर वर ।
करि मर्दन हम इनहिं बनावैं अति कोमल तर ॥४४॥

कोई नव नायिका सकल गुण परिपूरण अति ।
निज गुण के अभिमान मान करि सो निर्मल मति ॥४५॥
सखि मण्डल से निकसि कुंज में जाय छिपानी ।
गये मनावन ताहि राजनन्दन सुख मानी ।४६॥
बोली सो वर वाम परम पीड़ा मम तन में ।
तुम को सूझत रास महां सुख मानत मन में ॥४७॥
मम कटि में अति दर्द अस्तु मैं नटि नहिं पावत ।
तुम तो निज सुख मगन जोरि कर हमहिं मनावत ॥४८॥
सुनि पिय बचन रसाल जानि रुचि वाके मन की ।
मर्दत कटि तेहि केर मर्दि कुच पीड़ा तन की ।४६॥
कीनी वाकी दूर प्रेम पालक रघुराई ।
पुनि सखि को कर पकरि रास मण्डल में जाई ॥५०॥
नटत रसिक शिर मौर कामिनी काम प्रदायक ।
"सीताशरण" अधार प्यार वर्द्धक सब लायक ॥५१॥
मर्दन करि सखि कुचन सबनि सुख स्वाद महाना ।
देवत जीवन प्राण सुछबिधर रसिक सुजाना ॥५२॥
रघुनन्दन की भुजन बेग से सखियन उर की ।
टूटीं मोतिन माल जाल शोभित विथुरनि की ॥५३॥
जग जग जागति ज्योति लखत अस दृश्य जनावै ।
उड़गण विकशित यथा व्योम अति शोभा पावै ॥५४॥
अथवा जिमि जल माहिं कमल विकसित छबि पावत ।
तैसेइ रासस्थली मोतियन पाय सुहावत ॥५५॥

कबहुँ मधुर मन हरन प्राण जीवन प्रसन्न मन ।
पूरित प्रेम पियूष परम प्रिय अति भोरे बन ॥५६॥
देखी कोइ वर बाल चपल दृग मानवती अति ।
पगी पिया के प्यार नाग कन्या निर्मल मति ॥५७॥
जाकर वाके निकट परम लाघवता कर के ।
नाग सु मणि की माल बँधित नीवी मुद भर के ॥५८॥
दीनी पिय हँसि छोरि मनोरथ यह मन माहीं ।
रहित सु नीवी लखौं हर्षि इनके अँग काहीं ॥५९॥
तब लज्जित हो परम नाग कन्या निज तन को ।
अति द्रुत लीनो ढाँकि सकुच उपजो अति मन को ॥६०॥
तत्पश्चात् विशेष क्रोध करि सो सुकुमारी ।
दाँतन ओष्ठ दबाय मोतियन माल प्रहारी ॥६१॥
नाग कुमारिन केर अङ्ग के कुम कुम पिय के ।
लगि विलसत तन माहिं परम हारक सखिहिय के ॥६२॥
सखिदृग अंजन लागि बदन बिधु लसत बिन्दु युत ।
मानो शोभित शून्य सदृश सुन्दर तर अद्भुत ॥६३॥
सखियन के कुचमर्दि अधर में छत जब कीने ।
तब उन्हने हर्षाय चिन्ह नख के कर दीने ॥६४॥
अर्ध चन्द्र सम सु नख चिह्न वक्षस्थल ऊपर ।
अलकैं झलकैं सुभग परम बिथुरीं कपोल पर ॥६५॥
श्याम सरस घुँघरार परम मेचक जनु अलि गन ।
कल कपोल पर लसत अमल चंचल प्रसन्न मन ॥६६॥

नवल नायिकन मध्य परम शोभित नटवर पिय ।
निरखत हित सखि अङ्ग स्वजन रंजन उदार हिय ॥६७॥
मुक्तन रचित विचित्र कंचुकिन फाड़ि रसिक वर ।
देखत तिनके अङ्ग रङ्ग रँगि परम सु छबिधर ॥६८॥
पुनि उनके मर्माङ्ग लखन बर्द्धन विलास रुचि ।
व्योम वरण अति शूक्ष्म बसन पहिराय परम शुचि ॥६९॥
पूरत निज अभिलाष मनोभव वर्द्धन हारे ।
करत चरित्र विचित्र राज नन्दन सुकुमारे ॥७०॥
लखि चपलता विशेष पिया की सखिगन सारी ।
होकर अति भयभीत सिथिल तन दशा विसारी ॥७१॥
पुनि होकर प्रतिकस्थ चन्द्र बदनी वर वाला ।
दाड़िम सम सुठि दशन लसन मनहरन रसाला ॥७२॥
नागकुमारी सकल नवल नीवी तन कस कर ।
बाँधी अतिसय सुदृढ़ उच्च तर कला मुदित उर ॥७३॥
बन्धन अतिसय कठिन सहज कोइ खोलि न पावै ।
तब बोलीं हँसि वयन धीरता अभी जनावै ॥७४॥
हे महाराज कुमार आप की विशद कीर्ति वर ।
पूरिरहीं जग माहिं कीर्तन करत देव नर ॥७५॥
पर अब हमरी ओर कठिन कर्तव्य तुम्हरे ।
चलन न पइहैं एक जानिये रूप अगारे ॥७६॥
सावधान अब भईं सकल हम सुनहु सुजाना ।
तब तक चोरी करै चोर हे जीवन प्राना ॥७७॥

सावधान हो नहीं धनी जगि जाय न जब लौं।
अपने मन में चोर चतुर कहलावत तब लौं ॥७८॥
सावधान जगि धनी करन लागै रखवारी।
करै चोर बहु यत्न तदपि क्या सकै बिगारी ॥७९॥
वे सब प्राकृत चोर करत चोरी चुराय कर।
रहत धनी प्रत्यक्ष चलत नहिं तेहि उपाय वर ॥८०॥
अतः सकल हम वाम सु नीवी निज निज कस कर।
बाँधी अति दृढ़ रूप खोलिये अब प्रवीण तर ॥८१॥
तब हम जानै सही चोर अवधेश ललन वर।
दिखलाइय कर्तव्य कलित अपने प्रमोद भर ॥८२॥
सम्मुख हम सब केर नहीं चल सकै यतन तब।
याते जीवन प्राण प्रगटिये अपनो बल अब ॥८३॥
पूर्वोक्त कहि बचन प्रेम रस सिन्धु पिया सों।
सरित रूप सखि वृन्द मिलन लगि चहत हिया सों ॥८४॥
प्राणनाथ अनुरूप क्रिया गुण अङ्ग बचन वर।
अद्भुत रूप अनूप सुधा सम गुण सु शील तर ॥८५॥
प्रिय सौन्दर्य सु सिन्धु महाँ माधुर्य मूर्ति वर।
मंजुल मधुर मयंक वदन बिधु लसत कान्ति कर ॥८६॥
ऐसे अपने आत्म नाथ के प्रमुदित गुन गन।
नाग कुमारी निकर लगीं गावन उमङ्ग मन ॥८७॥
सुनि तिन के वर गान बार बहु प्रेम समाने।
सुभग चेष्टा लखत ललन लम्पट ललचाने ॥८८॥

रस विबर्द्धनी क्रिया कलित लखि पिय प्रसन्न मन ।
पावत परमानन्द पुष्प जिमि विकशित सुठि बन ।।८९।।
तिमि अमृतमय देह चित्त रोमांच भये तन ।
वारत निज आतमा भुवन भूषण उदार मन ।।९०।।
लखि सखियन की प्रीति रीति गथ बिना बिके पिय ।
कियो समर्पण तिनहिं देह मन चित्त बुद्धि हिय ।।९१।।

❀ होलिका उत्सव प्रकरणम् ❀

यहि विधि विविधि विलास रास रस अमल अनन्दा ।
अनुभव करत रसेश राजनन्दन सुख कन्दा ।।९२।।
जग में जो वर भोग तिनहिं जो भोगन हारे ।
तिन में नायक प्रवर नृपति सम जात पुकारे ।।९३।।
उन सब में श्रीराम परम अभिराम मोद घर ।
चक्रवर्ति नृप सरिस भोक्ता प्रवर सु छबि धर ।।९४।।
प्रवर भोक्ता भये विश्व में हैं जो होइहैं ।
ते कोइ श्री रघुवीर केर समता नहिं पइहैं ।।९५।।
विपुल नवल नायिकन मध्य नटवर नागर पिय ।
रमि रमाय सुख लेत देत अतिसय प्रसन्न हिय ।।९६।।
उद्दीपन आलम्बनादि बहु विधि विभाव वर ।
मङ्गल मय आनन्द अमल भोगत सुशील तर ।।९७।।
तब तक परमानन्द प्रदायिनि परम सुहावनि ।
आई होली ललति सुखद मन मोद बढ़ावनि ।९८।।

होली उत्सव करन हेत अति त्वरा विवश पिय ।
गोप सुता नृप सुता देव कन्यन प्रसन्न हिय ।।९९।।
गुह्यक साधक सिद्ध नाग कन्यन सु यूथ वर ।
कीने विविधि विभाग यथा रुचि राखि सबनि कर ।।१००।।

दोहा :——उत्सव के अनुकूल प्रिय, सौज अनेक प्रकार ।
दीन्हीं सीताशरण हँसि, सबको प्राण अधार ।। ३ ।।

तब सब निज निज पक्ष सखी अति सावधान चित ।
कछुक मैथिली ओर भईं कछु रत पिय के हित ।। १ ।।
यहि विधि सब वर वाम उभय करि पक्ष मुदित मन ।
भरि क्रीड़न उत्साह रमावत रमत पिया तन ।। २ ।।
जब श्री रसिक उदार परम रिझवार सखिन सँग ।
होली उत्सव हेत भये तत्पर रँगि रस रँग ।। ३ ।।
लोक रीति पगि प्रीति सखिन सुख देत छबीले ।
पावत परमानन्द प्रेम पालक गर्वीले ।। ४ ।।
रँगे तियन के रङ्ग विलक्षण रीति रसिक वर ।
रँग रस क्रीड़ा करत भरत उत्साह सु छविधर ।। ५ ।।
सोइ विचारि वर नारि नगर की बधू सयानी ।
आईं दर्शन हेत सिया के प्रेम समानी ।। ६ ।।
बन्दन करि पद पद्म आपनी सु रुचि जनाई ।
स्वजन सुखद मैथिली दीन आयसु हर्षाई ।। ७ ।।
उर की जानन हार सबनि मन की रुचि पाली ।
लखि सिय को अति प्यार बधू गण भईं निहाली ।। ८ ।।

होली खेलन योग्य बसन भूषण तन धारे ।
अमल नवल सुठि सुखद परम मनमोहन हारे ॥ ६ ॥
नाग कुमारिन सङ्ग रङ्ग रँगि खेलन लागे ।
पावत परमानन्द प्रेम पूरित बड़ भागे ॥१०॥
होली नामक पर्व परम पावन सुख दाई ।
यहि तिथि में सुर असुर मनुज तिय लाज बिहाई ॥११॥
खेलत होली मुदित अपर की कौन बखानी ।
उमा रमा शारदा शची वर नारि सयानी ॥१२॥
परम मनोरथ प्रगटि गईं जहँ रास विहारी ।
खेलत होली खेल सखिन सँग प्रेम पुजारी ॥१३॥
सोउ सब सिय रुख पाय परम उत्साह बढ़ाई ।
होली खेलन लगीं रङ्ग की झरी लगाई ॥१४॥
अति चंचलता युक्त सकल सुर तिय समुदाई ।
होली क्रीड़न करत प्रेम पगि मृदु मुसुकाई ॥१५॥
यद्यपि होली माहिं स्वभाविक नारि चपल अति ।
तापर अति मनहरन पाय रसिकेश विमल मति ॥१६॥
जो सब को प्रिय सुखद सौम्य मूरति सुकुमारे ।
तिन सँग तजि सङ्कोच लाज लहि मोद अपारे ॥१७॥
नगर बधूटीं निकर परम रस रङ्ग समानी ।
होली क्रीड़न करत परम सुख निज मन मानी ॥१८॥
लखि येहि भाँति रसाल ललित होली उत्सव वर ।
सुर समूह सुख पाय सुमन वर्षत प्रमोद भर ॥१९॥

बोलत जय जयकार करत स्तव रघुवर को ।
मानत निज सौभाग्य निरखि उत्सव छविधर को ॥२०॥
यहि विधि पूजित भये सुरन से राम रसिक वर ।
पुनि श्री सरयू सुतट निकट गमने उमङ्ग भर ॥२१॥
सङ्ग विपुल वर वाम रङ्ग रस रँगी छवीली ।
पागीं परमानन्द प्रेम पूरित गर्वीली ॥२२॥
पहुँचे सरयू निकट लगे स्नान करन पिय ।
सङ्ग सकल सहचरी मैथिली मोद करन हिय ॥२३॥
लेपित सखि अँग केर परम सौरभमय चन्दन ।
अङ्गराग छुटि गिरे लगाये जो जग वन्दन ॥२४॥
श्री सरयू जल माहिं पङ्कसी परत दिखाई ।
कर्ण फूल आभरण सखिन के कमल जनाई ॥२५॥
कच मेचक अति चपल सखिन के जनु शेवार सम ।
चक्रवाक सम लसत सु कुच उन्नत अति सुठि तम ॥२६॥
चंचल चख जनु मीन अरुण कल कमल सदृश कर ।
शोभित सरयू मध्य नवल नायिका नेह भर ॥२७॥
सखिन केर बहु भाँति रत्नमय विपुल विभूषण ।
सोइ श्री सरयू माहिं वालुका वृन्द अदूषण ॥२८॥
अतिसय स्वच्छ गुलाब सुमन आभा सम सुन्दर ।
सखियन के प्रिय अधर मधुर पिय मन प्रमोद कर ॥२९॥
सोइ जनु सरयू केर अधर मंजुल मन भावन ।
नाशामणि अरुदन्त अवलि सखि को छवि छावन ॥३०॥

सोई श्री साकेत सरयु की सुठि सीपी वर।
सखिन सु उन्नत कण्ठ सरयु के शङ्ख सुभग तर ॥३१॥
यहि विधि सखियन सहित प्रिया प्रीतम रस माते।
करत विनोद विहार विपुल विधि आनँद पाते ॥३२॥
जन समूह पूजिता परम उन्नत पद पाई।
सखियन युत सिय पियै भईं अतिसय सुखदाई ॥३३॥
भूपर जे सरि वृन्द सबनि ईश्वरी उदारा।
निज मर्यादा त्यागि कियो अतिसय विस्तारा ॥३४॥
जल विहार के योग्य उचित जितनो जल चाहत।
उतना ही जल भयो जन्तु बिन सुखद सुहावत ॥३५॥
शान्त कीन निज वेग विघ्न के हेतु हटाये।
होकर अति रसवती वशीभूता छवि छाये ॥३६॥
सिय पिय सुख रस हेत सखी सम सौम्य रूप धर।
हर्षित सन्मुख आय वन्दि पद कंज मंजु तर ॥३७॥
सिय पिय आयसु पाय सखिन बिच मोद समानी।
जल विहार प्रिय केलि कलित लखि सुभग सयानी ॥३८॥
पायो परमानन्द प्रिया प्रीतम सँग रँग रँगि।
सखि बहु छल बल हाव भाव प्रगटत सनेह पगि ॥३९॥
जल विहार की रीति यथा जब चाहिय जैसी।
सखिगन मन मुद भरीं भाव प्रगटावत वैसी ॥४०॥
तेहि रस क्रीड़ामाहिं परम स्निग्ध मधुर तर।
श्याम कमल सम सुभग महाँ मनहरन मोद कर ॥४१॥

इन्द्र नीलमणि दीप्ति सदृश श्री कौशल्या सुत ।
पूरित प्रेम पीयूष प्रिय न देवत सुख अद्भुत ॥४२॥
लखि सीधीं पुर बधू भईं कामना युक्त अति ।
एक टक रहीं निहार पलक नहिं गिरत विमल मति ॥४३॥
अतिसय भईं अधीर सर्वथा धीरज त्यागी ।
भय लज्जा सङ्कोच रहित निरखैं बड़भागी ॥४४॥
तनके भूषण बसन सम्हारब गईं भुलाई ।
प्रेम प्रपूरित नयन बयन बोलब बिसराई ॥४५॥
जैसे बीते निशा व्योम में लसत उड़ूगन ।
अथवा प्रातःकाल चन्द्र सोहै प्रकाश बिन ॥४६॥
अथवा जिमि कुमुदिनी दिवस में शोभा पावत ।
तथा सकल पुरवधू देंह की सुरति भुलावत ॥४७॥
करत मुदित जल केलि ललन सँग आनँद पाई ।
पीवत प्रेम पियूष परमरस रङ्ग समाई ।४८॥
लखि तिनकी यह दशा मैथिली मंजुल वयनी ।
गहि पिय को कर कंज मन्द मृदु हँसि मृग नयनी ॥४९॥
जल से बाहर जाय सुतट पर बसन बिभूषन ।
धारे अमल अनूप परम नूतन निदूषन ।५०॥
नगर बधूटिन सङ्ग रंग रँगि जब रघुनन्दन ।
करत रहे जल केलि प्रेम पगि आनँद कन्दन ॥५१॥
प्रेशित पितु की एक गई दूती तेहि अवसर ।
वोली बचन सनेह सनी सुनिये किशोर बर ॥५२॥

हे लालन प्रिय सुखद आपके पूज्य पिता वर।
भेजा है सन्देश श्रवण कीजिय उदार तर ॥५३॥
पितु को यह सन्देश आपहैं राजकुमारा।
हमरी अति प्रिय प्रजा सबनि के प्राण अधारा ॥५४॥
पुरवासी अङ्गनन सहित सहवास सुक्रीड़ा।
करब न तुमको उचित वत्स लागत सुनि ब्रीड़ा ॥५५॥
दूती के मुख कंज मंजु से सुनि सँदेश वर।
पितु आयसु धरि शीश परम आनन्द सुछविधर ॥५६॥
पुर युवतिन के योग्य आभरण विमल बसन वर।
सौरभयुत बहुबस्तु दीन सत्कार विपुल कर ॥५७॥
बहुरि हरषि नट नटिन विपुल आभरण अमलतर।
दिये बसन वर सुखद सबहिं सब भाँति तोष कर ॥५८॥
पुनि परिचारक वृन्द दास सेवक वन्दी वर।
मागत सूत सुजान सबनि अभिलाष पूर्ण कर ॥५९॥
तब प्रिय स्वजन अनन्य विपुल विधु बदनी वाला।
भरीं भक्ति भण्डार भाव भूषित छवि जाला ॥६०॥
तिन सब की रुचि परखि योग्य वर बसन विभूषन।
जे नित नूतन रहत अमल अनुपम निर्दूषन ॥६१॥
धारण तिनहि कराय कियो सत्कार विविधि विधि।
पागे परमानन्द प्यार पूरित सनेह निधि ॥६२॥
किये मुदित मन विदा सबहिं रघुराज कुँवर वर।
स्वयं गयो मणि महल माहिं विस्त्रित विशाल तर ॥६३॥

जहँ निज सहचरि वृन्द सुचर्चित राजकिशोरी।
विलसैं विविध विनोद वलित पिय प्रेम विभोरी।।६४।।
जब तक प्राण अधार अपर तिय गण सत्कारीं।
तब तक श्री मैथिली मंजु महलन पग धारीं।।६५।।
तेहि वर भवन मझार श्रेष्ठ उरु चरण युक्त सिय।
देवत निज सहचरिन बसन भूषण प्रसन्न हिय।।६६।।
तहँ आये हृदयेश प्राण वल्लभ रस पागे।
लखि सिय को सुख सहित लगावत हिय अनुरागे।।६७।।
पुनि पिय प्यारी मुदित सखिन युत भोजन करके।
पहिरे नूतन बसन विभूषण आनँद भरिके।।६८।।
रहे तहाँ जो स्वजन सबहिं भोजन करवायो।
प्रभु को परम प्रसाद विप्र खग, मृग, मिलि पायो।।६९।।
पुनि करि केलि कलोल कछुक तहँ राज कुँवर वर।
पावत परमानन्द सिया संयुक्त सु छबि धर।।७०।।
बहुरि अनेक प्रकार विविध विधि विपुल सु व्यंजन।
पाये प्यारी सँग सखिन युत जन मन रंजन।।७१।।
तत्पश्चात रसेश सूक्ष्म पीताम्बर कटि तट।
धारण किये प्रवीण परम क्रीड़ा रस लम्पट।।७२।।
मन मोहन उपरना एक काँधे पर धारे।
शिर पर मणि मुक्तादि रत्न कल क्रीट सम्हारे।।७३।।
सुन्दर तर कटि सूत्र नवल नूपुर भूषण वर।
धारे विपुल प्रकार दिव्य अति अमल कान्ति कर।।७४।।

प्राण प्रिया के सहित मधुर मृदु बोलन हारे।
नृप किशोर चितचोर चपल तर अति सुकुमारे।।७५।।
अतुल अपूर्व अनूप अमल तर सरस सुमन कृत।
विरचित सुठिहिंडोर परम शोभित अति अद्भुत।।७६।।
तापर भये विराजमान मैथिली सहित पिय।
लखि सब सहचरि वृन्द जयति जय कहि प्रसन्न हिय।।७७।।
वीणा, वेणु, मृदङ्ग, पटह, काहल सुवाद्य वर।
हर्षित हृदय बजाय गीत गावहिं प्रमोद कर।।७८।।
सो प्रासाद महान शरद कालीन मेघ सम।
मनहुँ गर्जना करै मधुर मंजुल प्रिय अनुपम।।७९।।
गावहिं किन्नरि गीत बजत बहु वाद्य सुहावन।
मानहुँ सो वर भवन गीतमय भो मनभावन।।८०।।
फूल डोल सुठि सुखद परम पावन विहार वर।
करत युगल सरकार प्यार पागे प्रमोद घर।।८१।।
प्रिय गन्धर्व कुमारि हर्षि हिय नृत्यत गावत।
प्रीतम प्रियै रिझाय परम रस स्वाद करावत।।८२।।
राजकुमारी विपुल फूल को डोल झुलावहिं।
अपर सकल सखि वृन्द कमल कर कंज फिरावहिं।।८३।।
सिद्ध कुमारी निकर सवन की सुछबि शील गुन।
रचनायुक्त प्रहेलिदि अति व्यङ्ग काव्य गन।।८४।।
सुना रहीं मनमुदित सबनि आनन्द बढ़ावत।
साध्य सुता बहुभाँति विरचि कर पद्य सुनावत।।८५।।

निज पटुता दर्शाय गाय करि सबहिं सुखारी ।
पावत परमानन्द प्रेम पूरित पिय प्यारी ॥८६॥
व्यङ्ग रहित स्पष्ट कथा कहि गुह्य कुमारी ।
देत परम सुख स्वाद सवनिचित कर्षण हारी ॥८७॥
गोप कुमारी वृन्द वसन भूषण कर धारे ।
दम्पति सेवा हेत खड़ीं लहि मोद अपारे ॥८८॥
यक्ष कुमारी निकर कलित केसर कपूर वर ।
सौरभ अमित प्रकार मिलित चन्दन लीने कर ॥८६॥
सिय पिय सेवा हेत भईं तत्पर सब वाला ।
नाग कुमारी वृन्द लिये ताम्बूल रसाला ॥९०॥
दम्पति सेवा हेत भईं अति प्रवृत सरस हिय ।
विपुल योगिनी वृन्द मार्जन करन हेत पिय ॥९१॥
लिये विविध वर बसन बिमल विधु बदनी वाला ।
सेवत युगल किशोर काहिं हर्षित सब काला ॥९२॥
श्री कौशल्या नन्द कन्द रस वर्द्धन हेतू ।
अनुदिन सब सहचरीं सुसेवत परम सचेतू ॥९३॥
मगन महोत्सव माहिं सर्व गुण सुधा प्रपूरित ।
सकल नवल नायिका रहत अनुछिन आनन्दित ॥९४॥
निज तन मन अरु प्राण आपनी भोग्य वस्तु वर ।
सादर दई समर्पि सिया रघुवरहिं मोद भर ॥९५॥
सबको मन यहि भाँति प्रिया प्रीतम पद लागत ।
भूलेउ भोग विभूति केर अभिलाष न जागत ॥९६॥

पिय छवि रस माधुर्य्य पान कर वशीभूत अति।
भईं सकल वर वाम पाय अभिराम अमल मति ॥९७॥
पिय दर्शन पीयूष पियत परिकर प्रमोद भर।
अपर सुभोग्य विभूति भूलि हू नहिं आवत उर ॥९८॥
ऐसे ही गुण रूप सुधा सम रघुवर माहीं।
दच्छिण नायक प्रवर तबहिं रसिकेश कहाहीं ॥९९॥
जब सब सखी समूह युगल पद सेवन लागीं।
तजि तन के सुख स्वाद प्रिया प्रीतम अनुरागीं ॥१००॥

दोहा:—यत्किंचित सेवा करे, वाको राजकुमार।
सुमिरत सीताशरण तेहि, प्रीतम प्राण अधार ॥४॥

अस पिय केर स्वभाव करैं जो कछु सेवकाई।
सुमिरत बारम्बार वाहि रसनिधि रघुराई ॥ १ ॥
अस्तु निरखि सहचरिन केर सेवा सुशीलता।
बोले परम प्रसन्न हृदय पिय सब सुख दाता ॥ २ ॥
हे प्रिय सहचरि बृन्द जन्म उत्तम कुल माहीं।
भा तुम्हरो अनुकूल सकल मोरे सब आहीं ॥ ३ ॥
मम आनन्द समुद्र केर शोभा वर्द्धन हित।
तुम सब लहर सदृश्य भईं सर्वदा मुदित चित ॥ ४ ॥
प्रथम लोक पाताल मध्य भूतल अति पावन।
बृह्मलोक अतिश्रेष्ठ सर्व ऊपर मन भावन ॥ ५ ॥
इन सब लोकन माहिं सर्वगुण पूरित सब विधि।
अति उत्तम सर्वथा सकल तुम हो प्रिय रस निधि ॥६॥

करि नित विविध विधान आप सब रूप उजारी ।
करवावत रस स्वाद सर्वदा परम सुखारी ॥ ७ ॥
तुम सब की सुठि देह शील गुण गण समुदाई ।
यावत सौज समाज अर्थ मेरोहि कहलाई ॥ ८ ॥
श्री कौशल्या सुवन अहौं मैं तुम सब सम्पति ।
हो मेरी सर्वथा सुखी होवत हम दम्पति ॥ ९ ॥
तुम्हरी सेवा पाय होत सन्तोष मोहिं अति ।
हमरे भाग्य वशात स्वर्ग तजि परम विमल मति ॥१०॥
तुम आईं भूलोक मिलीं हम को हर्षाई ।
युवा वयस सम्पन्न मधुर अङ्गी सुखदाई ॥११॥
सर्वभाव करि सुदृढ़ सतत मुझ को ही सेवो ।
यहि में निजकल्याण सकल विधि हिय गुनि लेवो ॥१२॥
यथा कहो तुम सकल तथाहित करौं तुम्हारा ।
पुरवहुँ मन अभिलाष यही कर्तव्य हमारा ॥१३॥
हे मृग नयनी विपुल परम पिक वयनी मन हर ।
अति दुर्लभ कामना करौं मै सुलभ मोद भर । १४॥
पूर्ण मनोरथ करौं यही सोचा मैं मन में ।
प्रगट कामना करो जगी इच्छा जो तन में ॥१५॥
मैं सब भाँति समर्थ तुरत करिहौं हर्षाई ।
तुम सब को सुठि रास भयो मोकहँ सुखदाई ॥१६॥
वैकुण्ठाधिप स्वयं हरी श्रीमन्नारायण ।
लहैं न अस सुख स्वाद भयो जस तुमहिं परायण ॥१७॥

अनिर्वाच्य कमनीय परम मनवांछित सुख कर।
मैं देखा तव रास महा मन हरन सरस तर ॥१८॥
याते भे हम ऋणी हमारी धनी भई तुम।
तव वांछित मैं करौं उरिण होवैं तुम से हम ॥१९॥
पाय परम सुख स्वाद लहो सन्तोष हृदय तुम।
कहिये तजि सङ्कोच वही कर्तव्य करैं हम ॥२०॥
आत्मबोध तुम लहो यथा अपने मन माहीं।
सोइ मैं करौं सप्रेम कार्य संसय कछु नाहीं ॥२१॥
जब यहि विधि वर बचन सुधा सम सुभग सरस तर।
बोले रसिक नरेश प्राणवल्लभ प्रमोद भर ॥२२॥
पी सो प्रेम पियूष सवनि अस मन अनुमाना।
हैं यह वैकुण्ठेश मोक्षपति श्री भगवाना ॥२३॥
कमल नयन भरि अश्रु भयो रोमांचित सब तन।
चितवन नीची किये सकल बोलीं प्रसन्न-मन ॥२४॥
हे जीवन धन प्राण परम मन हरन रसिक वर।
हम सबके हिय हार महा रिझवार सुछविधर ॥२५॥
अपने को पिय आप न्युन हमसे करिमानत
करत बड़ाई मोर हमनि को अति बड़ जानत ॥२६॥
यह तव वाणी विमल गरुअ तर परम सुहावन।
अति गम्भीर उदार भरित आसय मन भावन ॥२७॥
वात्सल्यता युक्त सतत आश्रित जन सुख कर।
अति रसज्ञता भरी मधुर मंजुल उदार तर ॥२८॥

देव असुर नर नाग सिद्ध गन्धर्व सुमुनिजन ।
आसय जाननहार नहीं विरचो विधि शुचि मन ॥२९॥
तब हम अति अलपज्ञ परम अवला क्या जाने ।
तुम्हरी गिरा अगाध भेद नहिं लहत सयाने ॥३०॥
जे विद्वान महान जगत में बहु यश पाये ।
तिनकी मति गति थकत लखत काहू न जनाये ॥३१॥
तब हम अति मति मन्द अर्थ क्या सकैं लगाई ।
सोइ जानत कछु भाव स्वयं तुम जाहि जनाई ॥३२॥
हे प्रिय परम प्रवीण आर्त बन्धो यह कहिये ।
कहँ हम सब अति तुच्छ बड़ाई यहि विधि चहिये ॥३३॥
कहँ तव महिमा अगम निगम आगम सुर नर को ।
अखिलेश्वर सर्वेश सर्व गति तुम से पर को ॥३४॥
त्रिभुवन युत ब्रह्माण्ड सु आश्रित रहत तिहारे ।
सो तुम कृपानिधान परम लघु बचन उचारे ॥३५॥
लहँ हम सबकी देह तुच्छ तर सुकृत केर फल ।
सतचित आनँद रूप कहाँ समता कहिये भल ॥३६॥
करै यदा जस सुकृत तासु फल रूप लहत तन ।
तैसी यह गति मोर आप व्यापक उदार मन ॥३७॥
प्रगटत निज जन लागि सतत उनकी रुचि पालत ।
करत आश्रितन सुखी महाँ खल बल दल घालक ॥३८॥
तव पद पङ्कज केर सदा चेरी हम सखिगन ।
पिय हम सब के स्वामि स्वयं विलसत प्रसन्नमन ॥३९॥

कहँ ऐसो मम सुकृत रहा तव दर्शन पावैं ।
भव रस में अति लीन विषय ही हमको भावैं ॥४०॥
करि निर्हेतुक कृपा आपने हे हृदयेश्वर ।
लियो हमनि अपनाय न मम कछु कृत प्राणेश्वर ॥४१॥
करि साधन जप जोग आपको को कोउ न पावत ।
सोइ तव दर्शन लहत कृपा करि जेहि अपनावत ॥४२॥
विन तव कृपा कटाक्ष करै कोइ कोटि यत्न वर ।
किन्तु न सीताशरण लहैं तव दर्श दृगन भर ॥४३॥
तुम्हरी कृपा कटाक्ष केर सौरभ सुठि पाई ।
हम सब भइ प्रेमान्ध सकल ऐश्वर्य भुलाई ।४४॥
तुम्हरी अमित अपार असित महिमा महान अति ।
जानत शिव शुक शेश शनक शौनक निर्मल मति ॥४५॥
किन्तु हमनि को भाव यही हम तिया तिहारी ।
हमरे प्रीतम आप रसिक मणि रास विहारी ।४६॥
केवल इतनोइ ज्ञान हमें हे प्राण अधारे ।
यही सुदृढ़ सम्बन्ध अपर नहिं रुचत पियारे ॥४७॥
तुम ईश्वर परमीश भाव यह हमनि न भावत ।
केवल निज पति जानि चरण चर्चत सुख पावत ।४८॥
आपहिं मम हृदयेश प्राण वल्लभ उदार तर ।
हम सब तव नायिका भाव यह प्रवल राखि उर ॥४९॥
प्रीतम तुम्हरे साथ रास में विविध भोग वर ।
भोगे कृपा कटाक्ष पाय तव हे सु शील तर ॥५०॥

जेहि को वासव तिया शची ब्रह्माणी शुचि तर।
विष्णु प्रिया लच्मी गिरि सुता पार्वती वर ॥५१॥
अपर विपुल शुचि वाम विमल कीरति जग जिनकी।
कोइ न लहे अस स्वाद विसद मोहित गति तिनकी ॥५२॥
अन्य कौन अस सुतियपरम उत्तम सुख स्वादा।
पावै विन तव कृपा कवन विधि हिय अह्लादा ॥५३॥
अतः प्रवाह स्वरूप सनातन अति अनन्त वर।
जगत अनादि अगाध मध्य हे परम सुभग तर ॥५४॥
अवधि रहित सर्वेश रहित बाधा विवाद गत।
अविरल बिश्व के सार रूप निश्चय कृपालु चित ॥५५॥
दिव्य सच्चिदानन्द रूप अनुपम वपु धारे।
सकृत एक ही आप प्राण जीवन धन प्यारे ॥५६॥
दृग धारी जग माहिं अहैं जहँ जो जेहि ठामा।
तिन सब को गति लब्ध आप ही पूरण कामा ॥५७॥
लघु अरु महत समस्त चराचर तुमको सेवत।
ध्यावत जानि उपास्य परम हिय में सुख लेवत ॥५८॥
तुमको गुनि सर्वस्व सतत् मानत स्व इष्ट प्रिय।
पाय कृपा रावरी लहत सुख स्वाद अमित हिय ॥५९॥
हे प्राणेश उदार पाय तव कृपा प्रसादा।
हमरे कुल परिवार लहत अतिसय अह्लादा ॥६०॥
तव कहिये हृदयेश सकल हम तव पद केरी।
हैं सन्तन किङ्करी रहत पद कंजन नेरी ॥६१॥

जिनका जीवन नाथ आप सर्वदा मोद भर।
निज कर करत सँवार प्रेम पूरित उदार उर।६२।
तिनकी इच्छा कवन होय जब स्वयं मिले प्रिय।
आपहि कृपा समुद्र स्वजन प्रिय कर सुजान हिय ॥६३॥
पूजीं सब अभिलाष हमनि की प्राण अधारे।
अब न कछू प्राप्तव्य रहा है दृगन सितारे ॥६४॥
पी तव सुछवि पियूष सकल कामना नशानी।
तव मागें क्या वस्तु आप ही कहिय बखानी ॥६५॥
अब हे जीवन नाथ एक ही सुरुचि हमारी।
सो करि कृपा अपार पुराइय रास विहारी ॥६६॥
वाको अवसर अहै सर्व समरथ प्रभु आहीं।
सो यहि रास मझार प्रगट करिये हम काहीं।६७॥
जन्म कर्म आपनो कृपा कर कहिय बखानी।
कवन प्रयोजन प्रबल प्रगट भे सुख रस खानी ॥६८॥
अपने वैभव आदि प्रगट करि हमनि दिखाइय।
निज यश विशद विशेष महामहिमादि जनाइय ॥६९॥
पिय तव आश्रित जनन रहत इच्छा कोइ नाहीं।
जन्म कर्म रावरो सुयश गुण सुनि हर्षाहीं ॥७०॥
इनही को वर स्वाद करत आस्वादन मन में।
सेवत निज पद कंज शोक श्रम होत न तन में ॥७१॥
कैसे जीवन प्राण आप प्रगटत जग माहीं।
सो करि कृपा कटाच्छ नाथ कहिये हम काहीं ॥७२॥

हे पिय कोमल हृदय मृदुलचित परम उदारा।
रघुकुल कमल दिनेश भूमि भूषण श्रुति सारा ॥७३॥
जिमि हम सब के जन्म कर्म जानन रुचि कीनी।
तुमने जीवन नाथ सकल हम सब कहि दीनी ॥७४॥
तिमि हे प्राण अधार रसिक रस वर्द्धन हारे।
कहिय कर्म अरु जन्म हेतु किमि अवनि पधारे ॥७५॥
स्वयं प्रकाश स्वरूप परम प्रतिभा प्रतिकाशक।
सतचित आनँद धाम अमल अविगत जग शासक ॥७६॥
वाको तजि हृदयेश हेतु केहि भूमिपाल घर।
प्रगटे करुणागार प्रेम रस सार सु छवि धर ॥७७॥
यहि विधि कहि प्रिय बचन परम चंचल चित चोरत।
मन्द मधुर मृदु हँसत पिया को रस निधि बोरत ॥७८॥
जो असक्य अति कठिन नियोजित वामें पिय को।
करत सहचरी वृन्द प्यार प्रगटावत हिय को ॥७९॥
अति चंचल दृग ललित परम विस्त्रित विशाल वर।
पिय को आनँदकन्द महा मनहर रसाल तर ॥८०॥
प्रिय सखियन के बचन श्रवण करि राजिव लोचन।
श्री कौशल्या नन्द कन्द सब सोच विमोचन ॥८१॥
माता हिय आनन्द सिन्धु के सुखद चन्द्र वर।
बोले श्री भरताग्रज कोमल बचन सरस तर ॥८२॥
हे अति प्रिय सखि वृन्द रहित दूषण छवि खानी।
पुण्या पतिव्रत निरत धर्म धारक सुख सानी ॥८३॥

श्री कौशल्या मातु हमें उनने जन्मायो।
पगि वात्सल्य महान विपुल विधि लाड़ लड़ायो ॥८४॥
इमि भो जन्म हमार कर्म से राजकुँवर हम।
करत निरन्तर रास परम सुख स्वाद लहत तुम ॥८५॥
राजकुमारन माहिं होय सामर्थ्य न ऐसी।
जो वर्णौं निज जन्म, कर्म, भावी, हो जैसी ॥८६॥
निज वैभव, गण, भाव, सकल को सकै जनाई।
अपर जन्म को हाल सकै कोइ किमि बतलाई ॥८७॥
यह जग में विख्यात जाहि है जितनो ज्ञाना।
जितनी जेहि में बुद्धि शक्ति जो दी भगवाना ॥८८॥
उसके ही अनुसार करत कृत सकल मनुज वर।
अधिक न कोइ कर सकै स्वयं देखो विचार उर ॥८९॥
यदि हम अपनो जन्म कर्म तुमको बतलावैं।
कछु अनुचित कछु उचित कहो कैसे कहि पावैं ॥९०॥
तदि कछु कहैं बनाय कछुक कृत लेहिं छिपाई।
बचन चातुरी प्रगटि करौं निज स्वयं बड़ाई ॥९१॥
तो यह अनुचित कर्म होय हम से नहिं कबहूँ।
परै विषम आपत्ति मृषा नहिं भाषौं तबहूँ ॥९२॥
पुनि कोइ पण्डित वर्ग झूठ में प्रेम न राखत।
हानि होय या लाभ सत्य ही सन्तत भाषत ॥९३॥
कहि इमि बचन रसाल बोध वैभव निज प्यारे।
दीनो सकल छिपाय राजनन्दन मन हारे ॥९४॥

अमित अपार अनन्त अकथ निज शक्ति महाना।
लीनी सकल छिपाय रसिक वर परम सुजाना ॥६५॥
अपने को नरमानि गुप्तकरि राखन हारे।
स्वजन सुखद सर्वदा प्रेम लम्पट सुकुमारे ॥६६॥
प्रीतम प्राण अधार सखिन रस रङ्ग समाने।
पावत परम प्रमोद प्रिया छबि निरखि लुभाने ॥६७॥
सुनि पियके इमि बचन प्रेमपूरित सब बाला।
बोलीं भरि अनुराग मधुर मन हरन रसाला ॥६८॥
हे जीवन धन लाल कान्त कमनीय सु छबि धर।
हम से रहे छिपाय आप अपनो वैभव वर ॥६९॥

दोहा–देव सभा में हम सकल, लालन सुयश तुम्हार।
श्रवण कियो सीताशरण, अति कमनीय उदार ॥ ५ ॥

हे चितचोर किशोर रावरो जन्म कर्म वर।
अमित दिव्यतर सुखद सुधा सम विमल मोद कर ॥ १ ॥
वदन महार्षी वृन्द परम आनन्द समाई।
गावत कीरति कलित सतत सुरगन सुखगन सुखपाई ॥ २ ॥
अवगत हमको नाथ भली विधि राजदुलारे।
हो न सकल सन्देह कदा हम को अब प्यारे ॥ ३ ॥
परमालुम हो गया सत्य के सिन्धु अहैं पिय।
किन्तु कृपा सुख सदन मदन मद मथन अमल हिय ॥ ४ ॥
हे सुठि साधु दयालु दीन बन्धो सुशील तर।
सदा सत्य सङ्कल्प आप सब विधि प्रमोद घर ॥ ५ ॥

जैसे कोइ भगवान केर, वर शक्ति अपारा ।
करि न सकत कोइ व्यर्थ करै किन यत्न हजारा ॥६॥
तैसेइ जीवन नाथ अटल आयसु तव अहई ।
सकत न कोई टाल निगम आगम नित कहई ॥७॥
जिमि सागर को सुतट स्वयं सोइ अथवा कोइ नर ।
करि न उलङ्घन सकै करै कोटिन प्रयास वर ॥८॥
वैसेई हृदयेश आपके वचन वेद सम ।
अति गम्भीर उदार प्रेम पूरित अति अनुपम ॥ ९ ॥
स्वयं प्रमाण स्वरूप कोइ करि सकत न बाधा ।
मधुर मंजु मन हरन सरसतम परम अगाधा ॥१०॥
और सकै को टाल न कोइ अस विधि जन्मायो ।
वदत निकर मुनि वृन्द शास्त्र वर बेदन गायो ॥११॥
दृढ़ प्रतिज्ञ अति आप अभी हमसों इमि वचना ।
बोले राजिव नयन मधुर मंजुल युत रचना ॥१२॥
जो रुचि तुम सब केर कहिय मैं तुरत पुरावौं ।
मन भावत कर कार्य सबनि मन मोद बढ़ावौं ॥१३॥
तव यह दृढ़ संकल्प व्यर्थ किमि होवइ प्यारे ।
हमनि मनोरथ प्रबल पूर्ण कीजिय मनहारे ॥१४॥
हे नर राज कुमार शरद पूणिमा चन्द्र सम ।
मंजुल मधुर मयंक बदन निर्मल अति अनुपम ॥१५॥
तुम पण्डित सिर ताज कृपा करि हमनि बताइय ।
मम हिय की अभिलाष शीघ्र अति पूर्ण कराइय ॥१६॥

निज शक्ती अनुमानि सकल नर करत प्रतिज्ञा।
सोइ सज्जन बुधि वन्त कहावत अति सय विज्ञा ॥१७॥
नाथ आप सर्वज्ञ अस्तु नहिं बात बनाइय।
मन वांछितदातार अधिक हमसे न छिपाइय ॥१८॥
जो पै पिय कामना हमनि की पूर्ण न करिहैं।
तो हे जीवन नाथ शीघ्र अति हम सब मरिहैं ॥१९॥
तजिहैं हम सब देह आपके नित्य धाम वर।
दिव्य सच्चिदानन्द कन्द अनुपम दुर्लभ तर ॥२०॥
करौं न तेहि स्वीकार कार्य तुमसे नहिं मेरो।
मैं किन पावौं भलेहिं विविध विधि त्रास घनेरो ॥२१॥
तैसेइ जीवन नाथ न हमसे कार्य तिहारा।
यदपि आप अति भव्य मधुर मनहरन उदारा ॥२२॥
हम सब तो सर्वदा विषय लम्पट संसारी।
अपनायो हम सबहिं आप ने रास विहारी ॥२३॥
नहिं पुजिहो अभिलाष आपतो पुनि दुख भारा।
सहिहैं हम सब बहुरि न कछु वश अहै हमारा ॥२४॥
सुनि तिनकी यहि भाँति कठिन हठ सठ विमूढ़ सम।
सोचत निज मन माहिं रसिक रस रमण मधुरतम ॥२५॥
श्री सीतापति सुभग भूमि पालक तन धारी।
परम तत्व परब्रह्म परम सुख कर मनहारी ॥२६॥
परमाह्लादिनि शक्ति सहित नर सरिस चरित कर।
रहे छिपाय परत्व आपनो स्वजन सुखद वर ॥२७॥

क्रोध युक्त लखि सखिन सरस प्रिय बचन मधुर तर।
बोले रसिक नरेश प्राण वल्लभ सुजान वर ॥२८॥
हे प्रिय सखि समुदाय कठिन अति प्रश्न तुम्हारा।
याको उत्तर देव नहीं सामर्थ्य हमारा ॥२९॥
जब तक हम सामर्थ्य पुरुष को करैं प्रसन्ना।
जो तव उत्तर देय होव जनि तुम सब खिन्ना ॥३०॥
तब तक मिलि तुम सकल सर्व व्यापक जग कारण।
विष्णु देव के चरितमुदित मन करहु आचरण ॥३१॥
जग स्वामी श्री विष्णु चरित अनुकरण करत दिन।
लीजै कछुक बिताय सकल मिलि अति प्रसन्न मन ॥३२॥
अस कहि कौतुक सिन्धु कीन एक कौतुक भारी।
सुठि आसन बिछवाय योषितन मध्य सुखारी ॥३३॥
बैठे प्राण अधार चित्त ऐकान्त कियो अति।
अनुसन्धानन लगे रुप निज सहज अमल मति ॥३४॥
जो प्रभु परम परेश अखिल जग कारण कारण।
सर्व प्राप्य सर्वात्म सर्वगत तारण तारण ॥३५॥
जो पर तर पर तत्व अखिल ईशन को स्वामी।
कारण कार्य विशेष सकल उर अन्तरयामी ॥३६॥
अप्रतिहत सर्वत्र वलित वैभव जेहि केरो।
सोइ श्री राम सुजान सुयश श्रुति भनत घनेरो ॥३७॥
अपनी लीलाशक्ति काहिं स्मर्ण कियो जब।
निज मन करि संकल्प सखिन सो कहत बचन तब ॥३८॥

ऐ विधु वदनी वाम मधुर मंजुल पिक बयनी।
लेहु विभाग वनाय परस्पर हे मृग नयनी ॥३९॥
कोई सखि गज वनहु एक वनि ग्राह वाम वर।
गज उद्धारण नाट्य करो तुम सब प्रमोद कर ॥४०॥
नाट्य ललित अति सुखद परम लीला रस वर्द्धन।
पावोगी अति स्वाद क्रोध कछु होइह मर्दन ॥४१॥
सुनि पिय के इमि बचन मधुर प्रिय सरस मोद कर।
आयसु सिर धरि लीन हृदय सुख भयो अधिकतर ॥४२॥
शरद विमल विधु वदनि चाँदिनी मद्दस प्रकाशित।
विपुल नवल नायिका पिया हिय कमल विकाशित ॥४३॥
श्रीअच्युत भगवान केर अवतार विधाना।
सोइ वर नाट्यनुकरण करन लागीं चित साना ॥४४॥
कोइ गज वनि कोइ ग्राह कछुक गज के कुटुम्ब बन।
गज को पकड़ा ग्राह श्रेष्ठ वक्ता उदार मन ॥४५॥
वे सब नव नायिका विष्णु भगवान केर वर।
गावन लगीं गजेन्द्रमोक्ष स्तोत्र हर्षि उर ॥४६॥
नृत्यति कोई वर वाम बजावति कोइ सुवाद्य वर।
अपर सहचरी कलित कमल लोचना मोद भर ॥४७॥
उनकी करन सहाय हेत विनती बहु करहीं।
कछु सहचरी समूह सुरन को सुठि तन धरहीं ॥४८॥
यहि विधि लीला करहिं सकल नायिका नवीनी।
पावत अति आनन्द भई सबकी मति लीनी ॥४९॥

मणिमय पर्वत एक दिव्य प्रगटेउ तेहि अवसर।
तापर विलसित एक महा विस्तीर्ण सरोवर।।५०।।
तेहि सर में गज ग्राह केर संग्राम भयावन।
होन लगा प्रत्यक्ष हारि गज हरिहिं बुलावन।।५१।।
हेत समर्पेउ कमल तुरत आये भगवाना।
मारेउ क्षण में ग्राह गजहिं उद्धारि सुजाना।।५२।।
पुनि भये अन्तर्द्धान दृश्य सब गयो छिपाई।
निरखत रामाङ्गना विपुल आश्चर्य समाई।।५३।।
लीला भई विराम बहुरि सखि गगन निहारा।
ग्राह ग्रसित गजराज पुकारत हरिहिं विचारा।।५४।।
वाकी रक्षा हेत चक्रधारी भगवाना।
आये वैकुण्ठेशनाथ करि क्रोधा महाना।।५५।।
श्रेष्ठ शुदर्शन चक्र चपल दारुण अमोघ वर।
वासे कीन विदीर्ण ग्राह गजराज मुक्त कर।।५६।।
पूजित सब से भये करैं स्तव मुनीश सुर।
निज वैभव पार्षदन सहित गमने स्वधाम वर।।५७।।
पुनि प्रगटे दो दैत्य महा दारुण परितापी।
निज प्रभावते व्याप्त किये स्थित अति पापी।।५८।।
लखि तिन को तन विकट परम भयभीत सकल तिय।
लगीं कहन अकुलाय बचाइय हे उदार पिय।।५९।।
मधु मर्दक भगवान तुरत प्रगटे तेहि काला।
निज सुचक्र से मारि गिराये दैत्य विशाला।।६०।।

इन्द्रादिक सब देव करत पूजा हर्षाई।
पुनि भगवान उदार गये निज लोक सिधाई ॥६१॥
करैं केलि कमनीय सखी लीला रस पागी।
तेहि क्षण बढ़ेउ समुद्र अवनि सब डूबन लागी ॥६२॥
उठत तरङ्ग महान त्रस्त वनिता गण भारी।
आई एक लघु मीन चढ़ाईं नाव सुखारी ॥६३॥
रक्षा करि सब केर मेरु सम देह बढ़ाई।
व्याप्त सिन्धु में भयो बारि पुनि गयो सुखाई ॥६४॥
बहुरि अदय सुर निकर और मिलि दैत्य महाना।
डारि महेन्द्राचलै सिन्धु मथि श्रम सहि नाना ॥६५॥
वाको धारण कीन मुदित भगवान कूर्म बन।
मन्थन पर्वत काहिं शीश धारे प्रसन्न मन ॥६६॥
मन्थन करत समुद्र होत गम्भीर महा ध्वनि।
पुनि केशव भगवान रत्न प्रगटे प्रवीण बनि ॥६७॥
असुर विमोहन हेत मोहनी रूप बनाई।
देवन सुधा पियाय बारुणी हँसि इठलाई ॥६८॥
असुरन दई पियाय विशद वर यह सुठि लीला।
देखत सब सहचरी अपर पुनि चरित रसीला ॥६९॥
देखा सबने एक अदितिसुत परम प्रतापी।
हिरण्याक्ष अस नाम महा मद पूरित पापी ॥७०॥
पृथ्वी लई उठाय तुरत बाराह एक वर।
ब्रह्मा की नासिका द्वार प्रगटेउ विशाल तर ॥७१॥

कूदेउ सिन्धु मझार लग्यो विहरन हर्षाई।
छीनि दैत्य से अवनि दाँत पर लीन उठाई ॥७२॥
तब हिरणाक्ष रिसाय चहत बाराहहिं मारन।
छोड़े बहु वर अस्त्र शस्त्र तेहि कीन निवारन ॥७३॥
एक चपेटा माहिं दैत्य को मारि गिरायो।
तब सब देव समाज बिपुल विधि स्तव गायो ॥७४॥
पुनि विराट बाराह भयो तब अन्तर्द्धाना।
ऐसे चरित अनेक लखे सखियन विधि नाना ॥७५॥
पुनि देखा अस सखिन दैत्य एक अति विशाल तर।
हिरण्यकश्यप नाम अदय सुर सन्त दुखी कर ॥७६॥
ताके भो सुत एक भक्त प्रह्लाद उदारा।
जो जग को हरि रुप जानि चिंतत अति प्यारा ॥७७॥
सुमिरत प्रभु को नाम परम पावन श्रुति सारा।
राम परम अभिराम मंजु सुख सिन्धु उदारा ॥७८॥
जब यह जाना दैत्य सुतहिं बहु विधि समुझायो।
माने नहिं प्रह्लाद बिपुल विधि भय दिखलायो ॥७९॥
तबहूँ श्री प्रह्लाद नाम स्मर्ण न त्यागा।
दियो दैत्य जस कष्ट बढ़ेउ तस तस अनुरागा ॥८०॥
तब खल अति खिसियाय अग्नि में डालि जरायो।
मरे न श्री प्रह्लाद बहुरि विष पान करायो ॥८१॥
गिरि से दियो गिराय जलधि में तिनहिं डुबायो।
मत्त गजेन्द्रन निकट भेजि मरवावन चाह्यो ॥८२॥

मरे न जब प्रह्लाद लौह को खम्भ तपायो।
तामें बाँध्यो भक्त खड़्ग निज हाथ उठायो ॥८३॥
मारन हित जब बढ़ेउ फारि तब खम्भ कृपाला।
भक्त वछल भगवान रूप नरसिंह विशाला ॥८४॥
प्रगटे अति रिस भरे दैत्य को पकरि जानु पर।
धर कर उदर विदारि आँत गल पहिर क्रोध भर ॥८५॥
कीन्हीं अति गर्जना डरे सुर असुर चराचर।
तब सब देव समाज करत विनती सभीत तर ॥८६॥
जब प्रभु भये प्रसन्न लच्छमी युक्त सखी गन।
देखे श्री नरसिंह डरीं सब अति सय निज मन ॥८७॥
पुनि देखैं सब वाम करत बलिराज मही पर।
लेवत छटवाँ भाग प्रजा से सतत यज्ञ कर ॥८८॥
यज्ञ करत लखि बलिहिं इन्द्र मन अति घबराई।
लेन हेत मम राज यज्ञबलि रहा कराई ॥८९॥
प्रभु सो कीन्हीं विनय यज्ञ में धरि वामन तन।
प्रगटे परम प्रवीण वेद वर विज्ञ मुदित मन ॥९०॥
श्री वामन वटु रूप तीन पग पृथ्वी मागत।
बलि जानत सब भेद तदपि नहिं मन सकुचावत ॥९१॥
दीनी बलि मन मुदित लगे नापन जब वामन।
लीन एक पग माहिं नापि सब अवनि सुहावन ॥९२॥
ब्रह्मलोक पर्य्यंत नापि दूसर पग माहीं।
तृतीय चरण बलि पीठि नापि हिय में हर्षाहीं ॥९३॥

भेजा बलिहिं पताल बिपुल बिधि अस वर लीला।
निरखत नव नायिका नाह के नेह रँगीला।।९४।।
प्रगटीं हरि चरणारविन्द से सुभग सुरसरी।
त्रिभुवन पावन करन हेत अतिसय मुद भरी।।९५।।
देखा सब सहचरिन पुनः यमदग्नि ऋषी घर।
बन्यो अतिथि तहँ कीर्तवीर्य अर्जुन नृपाल बर।।९६।।
जान लग्यो जब भूप ऋषी की काम धेनु प्रिय।
बरबश हर ले गयो परम दुख भयो ऋषी हिय।।९७।।
सो झगरा अति बढ़ेउ भूप के राजकुमारन।
काटो ऋषि को शीश रेणुका लगी पुकारन।।९८।।
अतिसय रोदन करै सुनत तहँ आय परशुधर।
परशुराम लखि चरित प्रतीज्ञा कीन कठिन उर।।९९।।
तिनने इक्किस बार भूमि बिन क्षत्रिन कीनी।
मारि क्षत्र परिवार मुदित महि देवन दीनी।।१००।।

दोहा—कबहूं श्री रघुनाथ से, हारि परशुधर वीर।
लज्जित हो सीताशरण, कीनी विनय अधीर।।६।।

दै निज धनुष विशाल स्वयं तप हित बन माहीं।
गये परशुधर मुदित सुछबि ध्यावत पुलकाहीं।।१।।
यह सब केलि कलोल मनोरामा अभिरामा।
लखत स्वलीला माहिं बिपुल बिधु बदनी वामा।।२।।
पुनि तेहि लीला माहिं सु गोपी नन्द यशोदा।
तिन को आनँद कन्द लखे श्रीकृष्ण समोदा।।३।।

बृन्दा विपिन मझार अमित गोपी जन सङ्गन ।
करत महा रस रास लखे तिन भरे उमङ्गन ॥ ४ ॥
हर्षि बजावत वेणु नटत गोपी समुदाई ।
करत केलि कमनीय स्वजन सुख प्रद यदुराई ॥ ५ ॥
अस देखा तिन सखिन बहुरि चोरी, हिंसा रत ।
मिथ्या अरु अपवित्र रूप अति दुराचार युत ॥ ६ ॥
देखा कलयुग बढ़त नशाये सकल धर्म जेहि ।
भयो यवन प्राबल्य आर्त अति कियो विश्व तेहि ॥ ७ ॥
बहुरि यवनक्षय करन हेत भगवान उदारा ।
निज वैष्णवी सु कला ग्रहण कर विश्व उधारा ॥ ८ ॥
नाश कियो पाखण्ड बाद खल बृन्द नशायो ।
पुनि सतयुग प्रगटाय धर्म थापन करवायो ॥ ६ ॥
यह सब लीला ललित लखत श्री राम रमणिगन ।
रासस्थली मझार विपुल विधि लहत मोद मन ॥१०॥
फिर देखैं वे वाम वेद निज दशों अङ्ग युत ।
प्रगटेउ श्री अवधेश रूप दशरथ अति अद्भुत ॥११॥
तिनकी ज्ञान सु शक्ति रूप कौशिला मातु वर ।
प्रभु की अचला भक्ति सुमित्रा रूप सुभग धर ॥१२॥
क्रिया रूप कैकई कुटिल करनी जेहि केरी ।
जेहि करि अति कुटितत सहाई विपति घनेरी ॥१३॥
यहि विधि शक्ति विभाग लखत सहचरी सयानी ।
पिय की प्राणाधार परम प्रिय आनँद दानी ॥१४॥

फिर देखा तिन सबनि सकल लोकन के ऊपर।
विलसत श्रीवैकुण्ठ मध्य साकेत दिव्य तर ॥१५॥
श्रीअच्युत वर लोक, अयोध्या, विमला, आदी।
वर्णत वेद पुराण शास्त्र परमारथ वादी ॥१६॥
पुनि देखत वे वाम जगत में प्रमुख भक्त वर।
सब शुभ लक्षण युक्त नाम लक्ष्मण सुशील तर ॥१७॥
हैं आराधन रूप सुलक्षण रघुनन्दन के।
पगे विमल अनुराग रहत नित जग वन्दन के ॥१८॥
श्रीशत्रुघ्न कुमार अहैं सहकारी तिन के।
विश्वम्भर ऐश्वर्य रहत आश्रित सब जिन के ॥१९॥
क्रिया, भक्ति, वरभाव, भजन के परम सहायक।
सब जीवन सुख दान नित्य अक्षय सब लायक ॥२०॥
भव्य पदारथ सकल विमल तर जहँ लगि अहहीं।
तिन सबके सुठि सार रूप श्री भरत कहाहीं ॥२१॥
अस देखा सब सखिन बहुरि राजाधिराज कर।
पेखेउ प्रवल प्रभाव परम प्रतिभा परत्व वर ॥२२॥
ब्रह्मादिक सुर निकर सिद्ध गन्धर्व मुनी जन।
सब मिलि करैं सनेह सहित वर विनय आर्तमन ॥२३॥
तब जग रक्षक राम परम अभिराम श्याम घन।
लेत विपुल अवतार करत क्रीड़ा सनेह सन ॥२४॥
अमित अचिंत्य अगाध अमल अनुपम अपार अति।
अकल अनीह अमोघ अचल अव्यय सुशील मति ॥२५॥

भक्ति भाव भावना भजन ग्राहक रघुनायक।
ज्ञान शक्ति बल वीर्य सिन्धु सब विधि सब लायक ॥२६॥
आश्रित जन सुख करन साधकन बाधक नाशक।
प्रेमिन प्रेम पियूष दान हिय कमल विकाशक ॥२७॥
सब विधि सर्व समर्थ सकल जग जीवन दाता।
सबके शासक प्रमुख सकृत रघुवर जन त्राता। २८॥
देखे शासक विपुल सकल नत शिर कर जोरे।
चाहत जिनकी कृपा करत वर विनय निहोरे ॥२९॥
ऐसे श्री रघुनन्द कन्द आनन्द परेशा।
पर तर परम परत्व प्रभा पूरित अवधेशा ॥३०॥
सकल धर्मधुर अग्रगण्य प्रिय पूज्य परम गति।
परमानन्द स्वरूप परम स्वच्छन्द विमल मति ॥३१॥
जिन सम अपर न अहै बड़ो जिन से कोइ नाहीं।
पर निज रुचि अनुसार अन्य सुर सरिस लखाहीं ॥३२॥
जग में जितने ईश करत जिनकी सेवकाई।
भोग्य भोक्ता विभव सबन पूजित रघुराई ॥३३॥
विभवादिक स्थान विपुल वैचित्र अनेका।
नित रघुवर आधीन रहत मानत प्रभु टेका ॥३४॥
ऐसे नित्य किशोर वयस सम्पन्न द्विभुज वर।
परब्रह्म परमीश प्रेम पूरित प्रकाश कर ॥३५॥
स्वयं स्वरुचि अनुसार प्रगट भय रघुकुल नायक।
कृपा सिन्धु कमनीय कुशल कल केलि विधायक ॥३६॥

जिनकी कीरति कलित अखिल लोकन में छाई।
नव नागर नमि नेह नायिकन नवल निकाई ॥३७॥
छन छन रहे दिखाय नवल नागर रस सागर।
प्रेमिन प्रेम पियूष दान अनुपम छबि आगर ॥३८॥
और सकल ऐश्वर्य, वीर्य, यश, ज्ञान, विरागा।
ये सब षडगुण सतत जिनहिं पूजत अनुरागा ॥३९॥
सज्जन सुख प्रद सदा अनुग्रह करत अपारा।
मधुर मंजु मन हरन सरस तर मूर्ति उदारा ॥४०॥
प्रबल प्रेम परतन्त्र नाम श्री राम सुखद वर।
विधि हरिहर श्रुति शास्त्र बीज रबि अनल सुधाकर ॥४१॥
इन सब को वर हेतु सकल सुख रस को सागर।
महिमा जानत शम्भु हलहल कियो सुधाकर ॥४२॥
जपि जाको प्रह्लाद विमल यश जग में पायो।
अति दुर्जय दुर्धर्श दैत्य जेहि पर रिसियायो ॥४३॥
कीने विपुल उपाय किंतु तेहि मारि न पायो।
सो भरि प्रभु कर कंज भक्त को मान बढ़ायो ॥४४॥
बिलसत पिय वामाङ्ग परम रमणी नव नागरि।
श्री मिथिलाधिप लली मैथिली रूप उजागरि ॥४५॥
सर्व गुणन की खानि महा ऐश्वर्य प्रपूरी।
चाहत सीताहरण सहत सुर नर मुनि धूरी ॥४६॥
मृदु चित सरल स्वभाव मधुर मंजुल सुठि सूरति।
अति उदार सुकुमारि कृपा मयि मन हर मूरति ॥४७॥

परमाह्लादिनि शक्ति भक्ति रूपा सर्वेश्वरि ।
पिय की जीवन मूरि सुखद अति प्रिय हृदयेश्वरि ।।४८।।
पुनि जो लीला ललित सतत सज्जन हिय ध्यावत ।
जेहि को आगम निगम देव मुनि जन नित गावत ।।४९।।
रावणादि बध केर कलित क्रीड़ा कलोल वर ।
निरखत सखि प्रत्यच्छ लहत सुख स्वाद अमलतर ।।५०।।
इमि श्री राम उदार शास्त्र श्रुति सार अपारा ।
कृपा मूर्ति रसिकेश श्याम सुन्दर सुकुमारा ।।५१।।
अपने सब अवतार चरित अलिगणन दिखाये ।
निज वर वैभव विशद विपुल विधि प्रगटि लखाये ।।५२।।
पुनः अचिंत अपार मार मद मर्दन मन हर ।
अमृतमय आकार परम सौन्दर्य्य मधुर तर ।।५३।।
जैसा मानो आज तलक सखि कबहुँ न देखा ।
भ्रमदायक नहिं कदा सत्य संतत जो पेखा ।।५४।।
परमानन्द स्वरूप ज्ञान बारिधि अपार अति ।
पूरक मन अभिलाष प्रेम लम्पट निर्मल मति ।।५५।।
शरद पूर्ण वर विमल सुधाकर सम मयंक मुख ।
मन्द मधुर मुसुकान युक्त दायक अपार सुख ।।५६।।
श्री कौशल्या नन्द कन्द हिय कमल विकाशक ।
रवि सम रवि कुल कमल विपुल खल दलन विनाशक ।।५७।।
वय किशोर सम्पन्न परम करुणामय मूरति ।
प्रगटे सखियन मध्य श्याम सुन्दर सुठि सूरति ।।५८।।

सब गुण गुण शुभ अङ्ग पूर्ण अज अजित अकथ वर ।
युवती गण के भोग्य केर सीमा उदार तर ।।५९।।
अपनी आत्मविभूति प्रगटि दिखलावन हारे ।
खड़े प्रगट प्रत्यच्छ मधुर मनहर सुकुमारे ।।६०।।
दृग भरि देखा सखिन पूर्व कृत निज कठोर कृत ।
कीनी नर बत बुद्धि विचारेउ नहिं हित अनहित ।।६१।।
यह स्मृति कर हृदय परम सकुचाय सखी गन ।
सब के शासक जानि महा भय मानी निज मन ।।६२।।
श्री मैथिली सनेह सुधा भाजन सुशील तर ।
तिन के प्रिय पदकंज माहिं सब भक्ति भाव भर ।।६३।।
अतिसय श्रद्धा सहित नम्र हो गिरीं दुखारी ।
कोमल चित रसिकेश स्वकर गहि सकल कुमारी ।।६४।।
प्रेम समेत उठाय जाय हिय मृदु मुसुकाई ।
अतिसय प्यार पियूष पियायो मोद बढ़ाई ।।६५।।
कहि प्रिय बचन रसाल सबहिं बहु विधि समझायो ।
डरपो जनि मन माहिं जानि निज अभय बनायो ।।६६।।
तुम सब मम सब भाँति हमहिं संतत सुखदानी ।
मेरी प्राणाधार अहो सखि वृन्द सयानी ।।६७।।
कहि इमि बचन रसाल मधुर मन हरन रसिक वर ।
दीनों सीताशरण तोष सब को सुशील तर ।।६८।।
पुनि तिन सब नायिकन रमावन हेत रसिक पिय ।
कामहुँ ते कमनीय रूप सागर उदार हिय ।।६९।।

निज स्वरूप का ज्ञान सखिन को दियो भुलाई ।
जीवन धन सर्वस्व श्याम सुन्दर सुखदाई ॥७०॥
निज ऐश्वर्य भुलाय कीन स्थिर तिनकी मति ।
केवल यह चित रहा एक यह ही हमार पति ॥७१॥
तीन लोक सौन्दर्य्य और शोभा ते बढ़कर ।
हैं यह राजकिशोर परम रस बोर मोद कर ॥७२॥
इनको सुभग स्वरूप सरस सौन्दर्य्य सुशोभा ।
मनचित मोहनहार कोटि मन्मथ मन लोभा ॥७३॥
हम सबके ही भाग्य विवश भा आविर्भावा ।
पिय को भूतल माहिं कृपा करि मोहिं अपनावा ॥७४॥
अनिर्वचनीय शक्ति भक्ति भावना भजन वर ।
ग्राहक ये हृदयेश प्राण वल्लभ उदार तर ॥७५॥
करि यह लीला पूर्ण प्राण जीवन सनेह भर ।
प्राण प्रिया संयुक्त अपर प्रासाद ललित वर ॥७६॥
कीनी तहाँ प्रवेश सप्त स्थान विनिर्मित ।
विरचित विविध विभाग रत्नमणि खचित लखतचित ॥७७
पावै परमानन्द प्रभा पूरित प्रकाश कर ।
हयशाला, गजशाल, सुरथशाला, अनूप वर ॥७८॥
शिविकाशाला ललित कलित अति भोजन शाला ।
बनत जहाँ बहु भोग मधुर तर सुखद रसाला ॥७९॥
विहारशाला सुभग शयनशाला मन भावन ।
सब सम्पति सम्पन्न भरीं बहु वस्तु सुहावन ॥८०॥

चहुँदिशि सर्व प्रकार करत रच्छा सैनिक जन ।
कामधेनु कमनीय कल्पवृच्छादि सुअनुपम ।।८१।।
नाना भाँति वितान तने सुख सने घने अति ।
भरित विपुल वर भोग सौज सुषमा सरसावति ।।८२।।
सुर अरु असुर समूह सबन दुर्दश्य अगम अति ।
विलसत जहँ विधु वदनि वाम अभिराम विमल मति ।।८३।।
सकल स्वकीय अलीं नहीं परकिया एक तहँ ।
ऐसो सदन अनूप अमल रसिकेश गये जहँ ।।८४।।
श्रीयुत भरत कुमार लखण रिपुदवन लाल वर ।
अपर अमित रानियाँ पूज्य तम राम कुँवर कर ।।८५।।
बिन श्रीराम निदेश जहाँ कोई नहिं जावै ।
ऐकान्तिक रासादि केलि रस तहँ सरसावै ।।८६।।
ऐसो मंजुल महल सकल सुषमा निधि पावन ।
तहँ असख्य रमणियन सहित सिय पिय मन भावन ।।८७।।
कीनो मुदित प्रवेश देश सो परम सुहावन ।
षटऋतु लीला ललित होय जहँ चित्त चुरावन ।।८८।।
वाही महल मझार लसत एक कल्प वृच्छ वर ।
तेहि नीचे वेदिका वनी मणि रत्न रचित तर ।।८९।।
तापर चिन्तामणिन रत्न माणिक मुक्ता युत ।
मण्डप बन्यो विचित्र चित्र चित्रित अति अद्भुत ।।९०।।
मोतिन वन्दनवार विपुल झालर लटकाई ।
ताने विमल वितान विशद असतरन बिछाई ।।९१।।

ताके मध्य अनूप मधुर पर्य्यङ्क सुहावन ।
स्वर्णरत्न मणि जटित परम मंजुल मनभावन ।।९२।।
अतर अनेक प्रकार सु सौरभ भरित सु वासित ।
कोमल कलित विचित्र स्वच्छ असतरन प्रकाशित ।।९३।।
तापर आगम निगम स्मृति प्रति पाद्य परात्पर ।
ब्रह्म सच्चिदानन्द कन्द अनवद्य अमल तर ।।९४।।
सर्व उपास्य उदार मार शत कोटि सुछविहर ।
प्रीतम प्राण अधार रसिक मन हर सनेह घर ।।९५।।
चिन्तन जेहि योगीश सतत अति आनँद माते ।
जाकी कीरति कलित कवीश्वर सुर मुनि गाते ।।९६।
ऐसे परम परेश प्रीति पूरित प्यारी पिय ।
पगे परस्पर प्यार ललकि ललचाय लगे हिय ।।९७।।
गाढ़ालिङ्गन किये लसतरसिकेश प्रिया सँग ।
पावत परमानन्द द्वन्द दुखहरण रँगे रँग ।।९८।।
दायक सुखरस स्वाद परम अह्लाद स्वरूपा ।
दम्पति सुषमा सदन बदन विधु अमल अनूपा ।।९९।।
तिनके दच्छिण ओर सखी श्री पद्मा सोहत ।
अग्रभाग सखि सूणी मुदित सियपिय छवि जोहत ।।१००।।
अपर दिशा में विपुल नवल नायिका सुखारी ।
खड़ीं मधुर मन हरण सुभग श्यामा सुकुमारी ।।१०१।।
कोइ कर कंजन कमल अमल ताम्बूल सरस प्रिय ।
लीने कोइ वर वाम विमल विधु बदनी शुचि हिय ।।१०२।।

दोहा—कोइ सखि भूषण कोइ बसन, छत्र विशद कोउ नाम ।
सीताशरण लिये लसत, कोइ सखि चँवर ललाम ।।६।।

यहि प्रकार बहु भाँति भाव भरि नवल नायिका ।
लिये राज उपकरण पियै रति रस प्रदायिका ।। १ ।।
सेवत प्रिय पद कंज मंजु कोमल सनेह भर ।
सकल कला कमनीय परम रमनीय सुभग वर ।। २ ।।
सुधा सरिस प्रिय मधुर मंजु पिय की अवलोकन ।
अवलोकत अलिअवलि अमित अति मोद लहत मन ।।३।।
पिय के चारों ओर खड़ीं तीक्षण कटाक्ष वर ।
बरसावत वर बाम विमल वदनी उछाह भर ।। ४ ।।
पिय को मन चित हरत करत कल केलि मधुर प्रिय ।
देत परम रस स्वाद चखत रसिकेश अमल हिय ।। ५ ।।
भूषण बसन विचित्र चित्र चित्रित तन धारे ।
अङ्गराग तन लेपि सुभग शृंगार सँवारे ।। ६ ।।
अङ्ग कान्ति कमनीय छटा छिटकति चहुँ ओरी ।
विद्युत सदृश प्रकाश प्रभा प्रगटाय अथोरी ।। ७ ।।
मोती विविध प्रकार नासिका शीश न धारे ।
कोमल कलित कपोल अमल रस मय मनहारे ।। ८ ।।
तिन पर पिय मनहरण मंजु तर अलकावलि वर ।
अतिसय चिक्कन सरस भरित सौरभ प्रमोद कर ।। ९ ।।
लसत ललन लखि तिनहिं परसि अति होत सुखारी ।
कमल, केतकी, स्वर्ण, बिज्जु, चम्पक दुति हारी ।।१०।।

सकल नवेली वाम परम अभिराम पिया को ।
लखि सिय के दृग कोर महाँ रस बोर हिया को ॥११॥
यहि विधि करत बिचार सकल अपने मन वाला ।
प्रीतम प्राण अधार मंजु मन हरन रसाला ॥१२॥
यद्यपि बनिता विपुल तदपि मोहिं अति प्रिय मानत ।
सबसे उत्तम बस्तु मोहिं दै अति सनमानत ॥१३॥
यद्यपि सखी समूह पिया को परम पियारी ।
आदर सब को करत कृपानिधि रास विहारी ॥१४॥
तद्यपि सबसे अधिक प्यार मानत हम से पिय ।
रति रस लम्पट लाल परम छबि जाल अमल हिय ॥१५॥
ऐसो निश्चय किये यही से सब सखि निशि दिन ।
सेवत अतिसय नेह नमित पद कंज हर्षि मन ॥१६॥
समय समय अनुसार उचित सेवा सुख पाई ।
श्रीसीतापति केर करत नव नेह समाई ॥१७॥
यद्यपि रसिक नरेश काहिं सब सखि समुदाई ।
भजत यथोचित भाव भक्ति युत आनँद पाई ॥१८॥
तदपि मैथिली मंजु पिया के सङ्ग सिंहासन ।
बैठन को अधिकार लह्यो सर्वथा सुभग मन ॥१९॥
शासन सब पर करैं प्रमुख सबसे अति प्यारी ।
मानत प्राण अधार रसिक मणि रास विहारी ॥२०॥
पिय की जीवन मूरि प्राणहू ते अति प्रिय तर ।
सर्वस अर्द्धात्मा रहित निन्दा प्रमोद कर ॥२१॥

दिव्य सच्चिदानन्द कन्द अति तेज पुंज वर ।
पिय को अति अभिराम मधुर मन हरण मंजु तर ॥२२॥
परमाह्लादिनि शक्ति भक्ति रूपा पिय केरी ।
पूरक पिय अभिलाष देत सुख स्वाद घनेरी ॥२३॥
पिय के सब अँग माहिं रमी मिथिलेश किशोरी ।
नख से सिख तक व्याप्त भईं अति प्रेम विभोरी ॥२४॥
पिय के नख सिख माहिं वदन में अमल सुखद वर ।
जो कछु है आनन्द सकल सो जनक सुता कर ॥२५॥
श्री मिथिलाधिप लली बिना नहिं कछु पिय माहीं ।
तैसेइ प्रीतम बिना प्रिया की स्थिति नाहीं ॥२६॥
सिय में प्रीतम बसत पिया में श्री सिय प्यारी ।
अतिसय भाव अभिन्न भिन्न तन धरत सुखारी ॥२७॥
दोउ के दोऊ प्राण दोउन पर दोउ वलिहारी ।
पिय विन रहत न प्रिया प्रिया विन रास विहारी ॥२८॥
प्रेमावेश विशेष परस्पर रँगे रङ्ग रस ।
दोऊ रसिक उदार प्यार पागे सनेह बस ॥२९॥
स्वजन सुखद सदैव स्वाद रस सिर्जन हारे ।
श्री मैथिली उदार रसिक जीवन पिय प्यारे ॥३०॥
अमल अनन्द स्वरूप रूप निधि जड़ चेतन वर ।
तिन सब काहिं रमाय रमत सब में सुजान तर ॥३१॥
उन सब नवनायिकन काहिं रस रङ्ग रँगाई ।
रमत रसिक शिर ताज राज सुत सबहिं रमाई ॥३२॥

जेहि की जस रुचि रही वाहि तेहि विधि सुख दीना।
नृप किशोर चितचोर संबनि अति रस वश कीना ॥३३॥
यहि विधि मन अभिलाष पूजि करि सबहिं सुखारी।
रमिरमाय रस स्वाद दियो पिय रास विहारी ॥३४॥
सब विधि सर्व समर्थ मनोरथ पूरक मनहर।
अति उदार चित सरस मधुर रमनीय सुछविधर ॥३५॥
कोटि काम कमनीय कोक कल कला कुशल वर।
प्रीतम प्राणाधार प्यार पूरित प्रवीण तर ॥३६॥
प्रिय परिकर सुख दान मान प्रद सतत स्वजन को।
पागे प्रेम पियूष मनोरथ पूरक मन को ।३७॥
ऐसे परम दयालु अमृतमय प्रिय कटाक्ष वर।
चितवन अति चित चोर मधुर मनहरन चपल तर ॥३८॥
यद्यपि अति गम्भीर धीर प्रिय बोल सुखद वर।
मेघ सदृश घन घोर परम रस बोर मृदुल तर ॥३९॥
जेहि ने भरि अनुराग दृगन यह रूप न चाख्यो।
इनको मंजु स्वरूप हृदय में नहिं धरि राख्यो ॥४०॥
वह ही जन अति नीच लोक निन्दा को भाजन।
जो न लखै भरि भाव रसिक वल्लभ सियसाजन ॥४१॥
वर्धन हित सखि प्रेम प्रेम लम्पट रस सागर।
निज मन कियो विचार प्रीति पालक नवनागर ॥४२॥
मैं सखियन सुखस्वाद देत बहु काल बितायो।
रमि रमाय तिन काहिं हमहुँ ने अति सुख पायो ॥४३॥

किन्तु मातु पितु केर करन चाहिय सेवकाई।
यह सुपुत्र को कार्य हृदय सोचत रघुराई ॥४४॥
प्रभु कल्याण स्वरूप सतत उत्साह भरित उर।
मनिष बुद्धि रत धर्म कर्म सर्वज्ञ मधुर तर ॥४५॥
प्रेमी जन हित करन भरन हिय में अपार रस।
बोले रसिक नरेश प्राण वल्लभ सनेह बस ॥४६॥
ऐ मम प्रिय सखि वृन्द प्रयोजन जौन रहा तव।
सो हम पूरण कियो नहीं कछु शेष रहा अब ॥४७॥
सब ऋतु को सुख स्वाद सकल विधि तुमहिं दियो हम।
अखिल सुखन आधार भाग्यशालिनी परम तुम ॥४८॥
तुम सबने सौहार्द विपुल विधि हमहिं दिखायो।
सेवा करि रुचि राखि महा रस स्वाद चखायो ॥४९॥
मुझ में परमाभक्ति आपनी सबनि जनाई।
यही उचित अति तुमहिं साधु शीला सुखदाई ॥५०॥
उत्तम कुल मधि जनम रूप, विद्या, गुण, खानी।
सर्वोत्तमा पुनीत प्रेम पूरित रस दानी ॥५१॥
हो देवी तुम सकल अस्तु नित नवल बाल सम।
एक रस रहत शरीर सतत तुम्हरो सुन्दर तम ॥५२॥
पर से पर प्रिय बस्तु विविधि वर भोग अपारा।
भय तुम सब को प्राप्त अनुग्रह पाय हमारा ॥५३॥
यद्यपि हमरे सङ्ग विविधि विधि भोग विलासा।
कीने तुम सब मुदित पूर्ण भइ सब अभिलाषा ॥५४॥

परदूषण पन रंज मात्र तुम में नहिं आयो ।
रमि रमाय मम सङ्ग परम रस चाखि चखायो ॥५५॥
अखिल विश्व की बस्तु हमारो भोग्य कहावत ।
तब मम अङ्ग प्रसङ्ग पाय कोई न नशावत ॥५६॥
अब आयो एक समय कहौं मैं सबनि बुझाई ।
भये पिता जी वृद्ध मोहिं नृप दिहैं बनाई ॥५७॥
युवा वयस सम्पन्न पुत्र नृप को बलवाना ।
होवै जब अति योग्य बुद्धि सम्पन्न सुजाना ॥५८॥
तब वाही को अबसि देत नृपराज बिठाई ।
स्वयं करत हरि भजन जाय बन माहिं छिपाई ॥५९॥
यह सब कहने केर प्रयोजन यही हमारो ।
तुम सब मानो सत्य आन कछु हिय न विचारो ॥६०॥
सुर अरु असुरन केर होत यहि भाँति स्वभावा ।
देखत जब नर सुखी छिद्र तेहि खोजत धावा ॥६१॥
याते भय अति होत हमहिं हे प्राण पियारी ।
तुम सब भाव विभोर मधुर तर अति सुकुमारी ॥६२॥
सहिं न सकोगी कष्ट कछुक जो शिर परि जइहै ।
हम सहिहैं भरि मोद दैव जो कछुक सहइहै ॥६३॥
अस्तु सुनो मम वयन चयन प्रद सकल अलीगन ।
जाहु यथा स्थान आप सब परम मुदित मन ॥६४॥
जहँ से आई जौन सखी सो वहीं पधारे ।
जो प्रमाद वश भये क्षमहु अपराध हमारे ॥६५॥

तुम सब कोमल हृदय दया मयि हो प्रसन्न अति ।
दीजै मोहिं प्रसाद अहो तुम सब निर्मल मति ॥६६॥
हम भय वश अकुलाय देत आज्ञा तुम सब को ।
अति प्रसन्न चित जाहु क्षमा करि सब विधि हम को ॥६७॥
यह निश्चय जग माहिं अवसि संयोग वियोगा ।
मित्र शत्रु कर होत यथा विधि केर नियोगा ॥६८॥
प्रिय को होत सँयोग रहत व्यापक तेहि माहीं ।
निश्चय होब वियोग टालि कोइ पावत नाहीं ॥६९॥
चाहे होवे पूर्व होय अथवा कछु दिन पर ।
होत अबश्य वियोग चलत वश कछु न काहु कर ॥७०॥
हे विधु वदनी वाल विलक्षण गुण गण आगरि ।
सब विधि सब सुख दानि प्रेममयि अति नव नागरि ॥७१॥
अतिसय प्रिय हम काहिं सुनो सब चित्त लगाई ।
निज प्रिय केर वियोग बिना जाने हो जाई ॥७२॥
तब कोमल अति सरस चित्त वालों को मानो ।
होत यक्ष्मा रोग सरिस तिन की गति जानो ॥७३॥
करि अति खिन्न शरीर राख में देत मिलाई ।
जानि वियोग जो होत न अति दुख सकत बढ़ाई ॥७४॥
याते किसी प्रकार बस्तु निज जाय हिराई ।
करे न पश्चाताप न अति मन में घबराई ॥७५॥
बिन जाने जो जात बस्तु तो अति दुखदाई ।
याते सतत विरक्त जानि तजि देत सदाई ॥७६॥

यद्यपि है वह सत्य झूठ नहिं तदपि सयानी ।
होवत नहिं मन माहिं कदा दुख और गलानी ॥७७॥
पुनि एक कारण अपर सुनो सब कोकिल बयनी ।
निज प्रिय होत परोक्ष जबहिं हे प्रिय मृग नयनी ॥७८॥
तब वाके गुण कीर्ति श्रवण करि प्रीति बढ़त अति ।
रहत सर्वदा निकट होत सो क्षीण विमल मति ॥७९॥
वर्णत श्रीमद् सूत सुनत पिय की इमि बानी ।
कोमल चित सब बाल मुर्छि महि गिरीं सयानी ॥८०॥
जिमि मारै जब व्याध मृगी भू पर गिर जावै ।
चंचलता बिसराय देह को भान भुलावै ॥८१॥
तिमि पिय केर वियोग जन्यवर वाक्य बाणसम ।
वेधित सबको हृदय भईं अतिविकल शीघ्र तम ॥८२॥
जब हो संज्ञा शून्य गिरीं महि पर अकुलाई ।
उनकी दशा निहार महाँ विसमय पिय पाई ॥८३॥
अतिसय व्याकुल भये परम कोमलचित रघुवर ।
कीनो महाविषाद प्रेम पूरित उदार तर ॥८४॥
वे सब बाला वृन्द परम रामा नव श्यामा ।
कमल सदृश कमनीय नयन रति सरिस ललामा ॥८५॥
तिनको मुर्छित निरखि कृपामय मृदु स्वभाव पिय ।
विह्वल हो उठि स्वयं उठावत सबनि दुखित हिय ॥८६॥
सादर कण्ठ लगाय लाय हिय प्यार जनाई ।
समुझावत बहुभाँति प्राण वल्लभ रघुराई ॥८७॥

श्री मिथिलाधिप लली अलिन युक्त परम प्यार भर ।
तिनको निजसखि जान दुलारत तोष देत उर ॥८८॥
समुझावत बहु भाँति सबहिं मिथिलेश दुलारी ।
करि आदर सत्कार करत सब काहिं सुखारी ॥८९॥
अंजनयुत वर नयन अश्रु मार्जन करि निज कर ।
अपनो प्यार पियूष पिया भर दियो मोद उर ॥९०॥
पुनि कोमल कल कमल सदृश्य रसिकेश सुघर वर ।
उनको वर विधु बदन बिमल निज कर मार्जन कर ॥९१॥
कीनो अति सत्कार चतुर चूड़ामणि छवि धर ।
तिनको विषम वियोग वलित मुख चन्द्र कोध भर ॥९२॥
बोली कोउ वरवाल पिया सों अति रिसियाई ।
हे जीवन धन लाल रसिक वल्लभ सुखदाई ॥९३॥
कहिये हे हृदयेश व्याध सम यह चतुराई ।
कहँ सीखी प्राणेश बधव तिय गण हर्षाई ॥९४॥
अपनो बाण चलाय व्याध मृगि यूथन मारत ।
आपहु हम सब काहिं वाक्य सर कठिन प्रहारत ॥९५॥
तो व्याधा अरु आप माहिं समता क्या नाहीं ।
यदि कछु अन्तर होय आप कहिये हम काहीं ॥९६॥
वाक्य वाण वर्षाय हमनि को व्याकुल कीना ।
कहिये जीवन नाथ आपने क्या सुख लीना ।९७॥
अहो कान्त कमनीय हमनि पर कियो प्रहारा ।
अपरिहार यह नाथ उचित नहिं राजकुमारा ॥९८॥

हम तो मृगी समान कलित केला सम कोमल।
तुममें प्राणअधार प्रीति हम सब की निर्मल ॥९९॥
कहना ऐसा शब्द कठिन नहिं उचित तुमहिं पिय।
जो सुनि पायो क्लेश परम हम सबनि केर हिय ॥१००॥

दोहा—यद्यपि तुमने प्राणधन, वाण, छुरा, तलवार।
"सीताशरण" न कियो कछु, भाला आदि प्रहार ॥८॥

तदपि जाव तुम चली शब्द यह अति कठोर तर।
भाला, लाठी, वाण, छुरा, तलवारहु ते वर। १॥
घाव करत हिय माहिं होय प्रेमी कोइ अपनो।
ऐसो शब्द कठोर कहव नहिं देखै सपनो ॥ २॥
प्रिय की तीक्ष्ण बात वाण सम वेधत हिय को।
अस्तु न कबहूँ कहै शब्द दुख दायक जिय को ॥ ३॥
जो पै ऐसोइ रहा करब तुम को हे प्यारे।
अपने विषम वियोग जराउव हमनि सदा रे ॥ ४॥
तो हे जीवन नाथ कीन संग्रह हमै सब को।
व्यर्थहिं प्राणअधार काह सूझो तब तुम को ॥ ५॥
पहिलेहिं रसिकनरेश हमनि स्वीकार न करते।
अब करि अङ्गीकार दोष निज शिर क्यों धरते ॥ ६॥
अब त्यागव सबभाँति अनुत्तम नाथ हमारा।
जीवन धन तव कीर्ति विशद कर्तव्य उदारा ॥ ७॥
वामें परै विरोध निठुर तर तुम को लोगा।
कहिहैं हे हृदयेश हमनि को होत वियोगा ॥ ८॥

जब निर्दय बनि कीन आपने कठिन प्रहारा।
तब ते सुखमय विश्व दुखद भो राजकुमारा॥९॥
विमुख रावरे होत सकल सुख दुखद महाना।
हम सबको प्राणेश भये हे रसिक सुजाना॥१०॥
अब यह अति रमणीय अयोध्या पुरी सुहावन।
हम सबको हे नाथ सर्वथा लगत भयावन॥११॥
कोटि काम कमनीय आप सब विश्व रमावन।
मो कहँ लगत न सुखद प्राण वल्लभ मन भावन॥१२॥
कीने हम सब सङ्ग आपने रास विलासा।
सो सब करुणा सदन स्वप्न सम हम कहँ भासा॥१३॥
पहिले जो यह विपिन परम रमणीक सुहावन।
लागत था रसिकेश मधुर मंजुल मन भावन॥१४॥
होत रुष्ट रावरे शून्य सम हमनि जनावत।
अतिसय रूखा भयो सरसता नयन न आवत॥१५॥
कोटिन वनितन अङ्ग सङ्ग करि लहत परम रस।
ब्रह्मचर्य का अन्त कबहुँ नहिं होत काहु बस॥१६॥
पुनि निर्भय रघुवंश हंस सम स्वच्छ विमल मति।
तामें भे अवतंश आप हृदयेश चतुर अति॥१७॥
पुनि अतिसय भयभीत होत यामें क्या कारण।
सब प्रकार सामर्थ्य आप करि सकत निवारण।१८॥
जाके डरसे सतत काल हू रहत डराई।
सोइतनो भयभीत होत क्यों कहिय सुनाई॥१९॥

लोकपाल यमकाल भानु शशि अग्नि मरुत वर ।
पालत सब संसार डरत निशिदिन जाके डर ॥२०॥
सोइ होवत भयभीत अहो आश्चर्य महाना ।
एक बात मोहिं कहत होत सङ्कोच सुजाना ॥२१॥
जाके घर में होय स्वयं युवती प्रिय नारी ।
श्यामा अति अभिराम परम मन मोहनहारी ॥२२॥
वाहि कहिय प्राणेश सकामी नर क्या त्यागी ।
जो पै त्यागन करै नहीं वाके रस पागी ॥२३॥
तो निश्चय जानिये नपुंसक सो नर अहई ।
कहिये वाको बीर जगत में फिर को कहई ॥२४॥
ऐसा ही यदि अहै आप में प्राण अधारे ।
तो पहिले ही कहा न क्यों तुमने हे प्यारे ॥२५॥
अब हे कान्त रसाल अपर मोहिं कान्त बतावत ।
बोलत ऐसे बचन तनक हू हिय न लजावत ॥२६॥
सब जग में विख्यात अहै पुरुषत्व तिहारा ।
वाहि न त्यागन करिय रसिक मन हरण उदारा ॥२७॥
हाँ यदि हो कोइ दोष हमनि में देखा तुमने ।
तो बतलाइ आप कवन कृत निन्दित हमने ॥२८॥
कीनो जीवन नाथ वेगि सो हमनि बताइय ।
न तरु रसिक रस दान वृथा नहिं बात बनाइय ॥२९॥
जेहि में देखै दोष अवसि सो त्यागन योगा ।
निज अथवा पर होय न अनुचित कहिहैं लोगा ॥३०॥

पर जेहि में नहिं दोष करै आरोपण कोई।
यह वृत्ती सर्वदा उचित नहिं पिय में होई ॥३१॥
अन्य न कोई दोष आप में है यै प्यारे।
तुम निर्दोषित सतत सकल विधि राजदुलारे ॥३२॥
यदि कछु तुममें करै नाथ दोषारोपण कोइ।
रंचहु नहिं हो सकत सत्य रसिकेश कदा सोइ ॥३३॥
हे नृप सुत चित चोर चपल चूड़ामणि छविधर।
सत्य सुनो मम वयन प्राण वल्लभ सनेह घर ॥३४॥
नहिं वैश्या हम लोग एक पति त्याग अपर को।
ग्रहण करैं हर्षाय खाहिं टुकड़ा बहु घर को ॥३५॥
यदि हम सब में दोष कल्पना कीन नाथ तुम।
होवै किसी प्रकार कहिय करुणेश सुने हम ॥३६॥
कहे न काहे प्रथम गोय मन में क्यों राखे।
अब त्यागव नहिं उचित दोष गुण सब तुम चाखे ॥३७॥
प्रिय संयोग वियोग दैव इच्छा से होई।
वश न चलत केहु केर टाल नहिं पावत कोई ॥३८॥
अतः न दुःख विशेष कि जीवन धन छुटि जइहो।
यह अति दुसह कलेश अयस जग में पिय पइहो ॥३९॥
तुम्हरो मृदुल स्वभाव क्रिया यहि विधि लखि प्यारे।
अपकीरति के पात्र बनो जग में सुकुमारे ॥४०॥
कहि यहि विधि वर वयन दुखित चित सब सुकुमारी।
लागीं रोदन करन मन्द मुख पोछत सारी ॥४१॥

निज सारिन के छोर माहिं मुख लियो छिपाई ।
भूलीं परमानन्द दुखी हो सखि समुदाई ॥४२॥
पुनि भरि प्रणय महान भईं सब सखि मतवारी ।
कोइ वीरी मुद्रिका कर्ण भूषणन प्रहारी ॥४३॥
कोइ सखि क्रीड़ा केर कलित कन्दुक सों मारत ।
प्रणय कोप में भरीं सुमन माला संहारत ॥४४॥
कोई करण पर्यन्त नयन वाली वर वामा ।
कज्जल युत कमनीय प्रेम जल भरित ललामा ॥४५॥
कुण्डल कलित कलोल मयूरा कृत धारी पिय ।
देखत हू नहिं लखै तिनहिं सो वाम विमल हिय ॥४६॥
कोइ सखि स्तुति करति स्वगुण से पियै रिझावति ।
देवति अति सन्तोष मोद मन माहि बढ़ावति ॥४७॥
कोइ उत्सुक अति मृदुल भाव भूषित पिय काहीं ।
मिलन चाह में भरी सुस्तुति करत सुहाहीं ॥४८॥
पिय को परम प्रसन्न करन हित कोउ सुकुमारी ।
करति चेष्ठा विपुल महा छबिनिधि मनहारी ॥४९॥
मदिरेक्षणा सु बाल लाल को हृदय बिठाई ।
राजिव दृग प्राणेश रूप में ध्यान लगाई ॥५०॥
जब इन की यहि भाँति दशा देखी रघुनन्दन ।
तब हिय कियो विचार प्राण वल्लभ जगवन्दन ॥५१॥
हुईं हमें यह प्राप्त मनोरथ सर्व प्रकारा ।
हमने पूरण कियो दियो सुख स्वाद अपारा ॥५२॥

मेरी अति सय प्रिया पृथ्क हम से हो जावैं।
यह हमको नहिं उचित यहू सब अति दुख पावैं ॥५३॥
इमि विचारि मन माहिं स्नेह कातर प्रवीण तर।
निरखत श्री मैथिली ओर यहि भाँति भाव भर ॥५४॥
प्यारी सम्मति बिना कार्य की सिद्धि न होई।
लखि पिय हिय को भाव विचारत स्वामिनि सोई ॥५५॥
मैंने प्रथमै कहा नाथ सों यों समुझाई।
निज मन को व्यवहार सतत करिये हर्षाई ॥५६॥
अस विचारि मनमाहिं कहैं मिथिलेश दुलारी।
हे जीवन धन प्राण रसिक मणि रास विहारी ॥५७॥
मैंने जीवन नाथ आप को प्रथम बतायो।
निर्भय हो रसिकेश करिय अपनो मन भायो ॥५८॥
यत्न बान नृप वही लोक में हे सुशील वर।
होयँ रत्न जो प्राप्त करैं संग्रह बटोर कर ॥५९॥
परम रत्न की भाँति अहैं सब ये सुकुमारी।
तुम्हरे संग्रह करन योग्य गुण रूप उजारी ॥६०॥
यहि विधि श्री मैथिली केर वर बचन श्रवण कर।
उनके मनकी जानि मन्द हँसि कहत रसिकवर ॥६१॥
हे प्रिय तर सब सखी शोभनाओं मन हरनी।
सर्व प्रकार हमार अहो नित मम हित करनी ॥६२॥
मम गुण गण लीलादि चेष्ठा में तुम सारी।
लग्नश्या सब भाँति करत हम काहिं सुखारी ॥६३॥

हम जानत तुम सबनि आपनो मन बुधि अरु चित ।
अर्पण कीने हमहिं मानि सर्वस अपनो वित ॥६४॥
अर्थ, धर्म, अपवर्ग, स्वर्ग हमको ही मानत ।
सन्तत मम पद कंज मंजु में ही चित सानत ॥६५॥
अतः यथा पद रेख चरण ते विलग न जावत ।
तन की छाया त्याग तनहिं जावन नहिं भावत ॥६६॥
तथा कदा तुम सकल विलग हम से नहिं रहिहो ।
सन्तत रहि मम सङ्ग सर्वदा अति सुख पइहो ॥६७॥
मम आश्रित हो रहो त्याग कबहूँ नहिं करिहैं ।
मैं रहि तुम्हरे साथ हृदय में नव रस भरिहौं ॥६८॥
गृह लच्मी हमार प्राण संजीवनि तुम सब ।
तजि भय संसय सकल रहो मेरे सँग में अब ॥६९॥
देखो तुम सब माहिं कछुक हैं देव कुमारी ।
सब से अतिसय उच्च परम रमणी मन हारी ॥७०॥
कितनी नव नायिका नाग कन्या सुकुमारी ।
नाग लोक पर्यन्त अहै तुम्हरी गति प्यारी ॥७१॥
कितनी प्रिय बर वाम राज कन्या मन हारी ।
तुम सब की गति कहौं काह है सब से न्यारी ॥७२॥
अतः बिचारो यही हमहुँ ने निज मन माहीं ।
जहँ जहँ की तुम सकल तहाँ सुख संयुत जाहीं ॥७३॥
यदि कछु उत्सव होय वाहि लखि मोद समेता ।
आवहु गी मम निकट बहुरि हिय परम सचेता ॥७४॥

वाहि करै को भङ्ग देख कर मम ढिग आवहु।
पुनि रहि हमरे सङ्ग रङ्ग रँगि नव सुख पावहु ।।७५।।
याही से मैं तुमनि प्रेरणा दई उचित अति।
पर तुम समझीं नहीं भई व्याकुल निर्मल मति ।।७६।।
यह भी कारण अपर देव उत्सव देखन हित।
जावोगी मन मुदित आप सब प्रेमा कुल चित ।।७७।।
लखि सो सकल समाज सुरन की खबर सुनइहो।
बिना यत्न ही किये स्वर्ग की गाथा कहिहो ।।७८।।
याते तुम से कहा अपर कारण कछु नाहीं।
तुम सब सतत अदोष दोष नहिं कछु तुम माहीं ।।७९।।
वह ही हैं हम और वही हो तुम सब वामा।
वैसे ही प्रिय हमै सकल तुम मन अभिरामा ।।८०।।
वही शरद ऋतु सुखद मनोहर सरस रास प्रिय।
वह ही चरित पवित्र प्रीति पूरित सुशील हिय ।।८१।।
विपुल विनोद विहार क्रिया कर धन्य रासथल।
अब भी है वह वहीं अयोध्या पुरी वही कल ।।८२।।
तथा प्रफुल्लित कमल अमल पूरित सरयू सरि।
वह भी हैं तेहि ठाँव कियो अनुभव तुम मुद भरि ।।८३।।
और वही सब वस्तु न किंचित न्युन भई अब।
मम लीला अनुकूल सकल उपकरण वही तब ।।८४।।
होतहु सर्व समर्थ काल इनको न मिटइहै।
अतः सतत सब काल सङ्ग हम सब को रहिहै ।।८५।।

अन्तकाल पर्यन्त नित्य संयोग तिहारो।
बिन वियोग सर्वदा बनो रहिहै हिय धारो ॥८६॥
और हमारी प्रीति सतत तुम सब में एक रस।
रहिहै सबविधि बनी घनी मैं नित तुम्हरे बस ॥८७॥
तैसेहि तुम सब केर प्रीति बिन नाश रहित नित।
रहिहै हम में बनी अहो तुम सकल विमल चित ॥८८॥
सर्वकाल रस एक आपकी भक्ति भाव वर।
हम में सर्व प्रकार बनो रहिहै प्रमोद कर ॥८९॥
होवै अति कल्याण भद्र रूपा तुम वामा।
मेरी प्राण अधार सतत दायक अभिरामा ॥९०॥
होवैं परम प्रसन्न देव पर हमरे तुम्हरे।
देवैं महाँ प्रसाद मुदित सारैं कृत सबरे ॥९१॥
इमि समुझावत तियन प्राण प्रीतम प्रमोद भर।
परतर परम परेश ब्रह्म व्यापक सनेह घर ॥९२॥
कार्य कारण परे सर्व अवतारी छबि धर।
जासु अंशते होत विपुल अवतार अवनि पर ॥९३॥
सोइ प्रभु परमानन्द प्रेम पूरित उदार तर।
विहरत अब लौं नित्य तियन संवेष्टित सुख कर ॥९४॥
नित्य अयोध्या माहिं नवल नित करत विहारा।
नवल नायिकन सङ्ग रङ्ग रँगि राजकुमारा ॥९५॥
यहि विधि मम गुरुदेव कृष्णाद्वैपायन स्वामी।
मम हित की कामना हेत प्रभु अन्तर यामी ॥९६॥

वर्णन हम से कियो कथन कर यह चरित्र वर।
भये सर्वथा लीन ध्यान में श्री रघुवर कर ।।९७।।
ध्यावत करुणा कन्द द्वन्द हर राम कुमर को।
सीताशरण अधार प्यार पूरक प्रिय वर को ।।९८।।

दोहा—जो चरित्र हमने कहा, तुमसे सुखद उदार।
सोइ जीवन सर्वस्व है, "सीताशरण" हमार ।। १ ।।

पुनि हे अनघ उदार बुद्धि तुम सब श्रद्धा युत।
पियो चरित्र पियूष परम रस मय अति अद्भुत ।। १ ।।
श्री मद्व्यास सुजान वर्णि यह चरित सुहावन।
रामायण शतकोटि चरित ब्रह्मा की पावन ।। २ ।।
जो जग में विख्यात पान उन शब्द को करके।
रस मय चरित उदार आत्मबल हिय में भर के ।। ३ ।।
कर पवित्र चित और आपनो अन्तष्करणा।
अति विस्तार पुराण अष्ट दश रचि के वरणा ।। ४ ।।
तत्पश्चात विशाल महाभारत की रचना।
कीनी श्री गुरुदेव मधुर मंजुल प्रिय बचना ।। ५ ।।
ज्ञान कला श्रीराम केर सद्गुरु मम सुन्दर।
प्रगटे द्वापर माहिं चरित वर्णों हरि हर कर ।। ६ ।।
वदत सूत सुख भरे सुनो शौनक मुनि ज्ञानी।
मैं जो अनुभव कियो श्रवणकर गुरुवर वानी ।। ७ ।।
कहिय न वाहि पुराण न जेहि में चरित राम कर।
नहिं वह सुठि संहिता न मेरे किसी काम कर ।। ८ ।।

जेहि में गुण गण विमल राम के कहे न पावन ।
नहिं सो वर इतिहास न जेहि में कथा सुहावन ॥ ९ ॥
लिखी राम की होय नहीं वह काव्य सुखद वर ।
जेहि में कियो न होयँ राम गुण गान विमल तर ॥१०॥
भनित न राम चरित्र नहीं वह शास्त्र शास्त्र वर ।
तीरथ तीरथ नहीं प्रतिष्ठा जहँ न राम कर ॥११॥
नहिं वह यज्ञ महान राम पूजा जहँ नाहीं ।
अग्नि रूप हो प्रबल जरावति कर्ता काहीं ॥१२॥
कहिय न वाको योग रोग सम वाको जानो ।
जहँ न राम को ध्यान संत श्रुति शास्त्र बखानो ॥१३॥
नहिं वह सभा महान राम चर्चा जहँ नाहीं ।
कलह रूप सो काल राम चिन्तन बिन जाहीं ॥१४॥
राम कीर्तन करै वही प्रिय काल सुहावन ।
सोइ विद्या बर सुखद राम यश वर्णित पावन ॥ १५॥
राम कथा से रहित अविद्या माया सम सो ।
होवै किन मन हरन मधुर अतिसय उत्तम सो ॥१६॥
राम सुयश, गुण, नाम, कीर्तन होय न जेहि थल ।
भय दायक स्थान वहाँ जाये न होत भल ॥१७॥
जेहि मुख से श्रीराम नाम पीयूष श्रवत नित ।
तेहि को मुख मानिये अन्यथा कहत विमल चित ॥१८॥
निकरत नहिं मुख राम नाम तेहि गिनो भार सम ।
होवै किन सुठि सुखद भरित सौन्दर्य्य सु अनुपम ॥१९॥

वाको तो मानिये सर्प की विल समान अति ।
यहि विधि वर्णन करत मुदित श्री सूत विमल मति ॥२०॥
जेहि घर में नहिं होत राम पूजन सुखदाई ।
अस्मशान सम कहिय वाहि अति दुखद सदाई ॥२१॥
और बहुत क्या कहौं राम से रहित विश्व सब ।
व्यर्थ जानिये वाहि न मेरे काम केर अब ॥२२॥
ऐसे मैम गुरुदेव व्यास ने कहा बखानी ।
निज सु यज्ञउपवीत माल स्पर्शत पानी । ॥२३॥
इन दोउ की करि सपथ बचन श्री व्यास बखाने ।
हे शौनक मैं तुरत सुदृढ़ कर हिय विच आने ॥२४॥
अति सुन्दर मनहरण अमित वनितन सँग रघुवर ।
करत रास रति रमण केलि कौतुक कलोल कर ॥२५॥
क्रीड़ा रस लयलीन मैथिली सहित सखिन सँग ।
करत विहार अपार मार मद मथन रँगे रँग ॥२६॥
नाना भाँति चरित्र मधुर मन हर पवित्र अति ।
करत रसिक शिर ताज राज नन्दन उदार मति ॥२७॥
परानन्द श्रीराम परम अभिराम काम सुख ।
सम्बन्धी बहु चरित कहे जहँ लेश नहीं दुख ॥२८॥
रहा यही तव प्रश्न कहो क्या राम उदारा ।
रासादिक वर चरित किये रघुवीर कुमारा ॥२९॥
वाको उत्तर दियो परम विस्तार सहित मैं ॥
भरि हिय में उत्साह अभय दुख द्वन्द रहित मैं ॥३०॥

यह रासादिक चरित सरस तम परम मधुर तर ।
सन्तत रहित वियोग नित्य संयोग सुखद वर ।।३१।।
जेहि में श्री रशिकेश प्राणजीवन मन भावन ।
निशि दिन हो रस लीन प्रेम लम्पट प्रिय पावन ।।३२।।
पागत परमानन्द प्रिया युत प्रिय सखियन सँग ।
रमि रमाय सुख स्वाद लेत देवत रँगि रस रँग ।।३३।।
जो रसज्ञ जन सतत मधुर लीलामृत पावन ।
करिहैं सादर पान धन्य तिनके बड़ भागन ।।३४।।
कहि को पावै पार धन्य नर जग में जेते ।
तिन सब में वे अग्रगण्य रस पीवत तेते ।।३५।।
यह लीला कमनीय लोक संग्रह हित नाहीं ।
अति अधिकारी काहिं गुप्त है वेदन माहीं ।।३६।।
श्रीमद्व्यास सुजान अष्ट दश प्रिय पुराण वर ।
लिखे जगत सुख हेत कही तिन में सु गुप्त कर ।।३७।।
जो अधिकारी अहैं करत अनुमोदन निशि दिन ।
उनहीं को अति सुखद न कहिये कबहुँ रसिक बिन ।।३८।।
अपर श्रवण जनि परै लाभ वाको नहिं करिहै ।
करि निन्दा यहि केर अवसि ही नरकहिं परिहै ।।३९।।
याते सज्जन काहिं कहिय एकान्त सुथल में ।
भक्ति सहित जो सुनै वही अधिकारी भल में ।।४०।।
होइ है निश्चय रूप तासु कल्याण महाना ।
यामें संसय रंच न मानिय आप सुजाना ।।४१।।

जो सुनि भाव समेत ध्यान उर में नित करिहैं।
निश्चय दास समान काम नित वासे डरिहैं॥४१॥
षट विकार जो प्रबल सबनि में काम महाना।
सो निश्चय वश होय दास सम वाहि लजाना।४२॥
जाके वश में काम सिद्धि सब वाके साथा।
राखत वापर कृपा अमित रसनिधि रघुनाथा॥४४॥
याको निन्दक पुरुष हानि अति वाको होई।
जो सन्तत अति दुखद सुखी तेहि करै न कोई॥४५॥
याते रसिक समाज सदा यहि को मुद माते।
गावत "शीताशरण" हृदय में नव रस पाते।४६॥
अब हे मुनिवर वृन्द कवन सो चरित राम कर।
तुमसे कहैं सुनाय कहिय मुनिराज मोद भर॥४७॥
लहि तुम सब की कृपा आज मैं रास चरित को।
हूँ सब भाँति समर्थ कहन में प्रेम सरित को॥४८॥
यह प्रभु बाल चरित्र कछुक मैं तुमहिं सुनाये।
ब्याहादिक वर राम केलि गुरुवर जो गाये॥४९॥
श्री रघुवीर उदार आप पर हो प्रसन्न अति।
करैं कृपा की कोर आप सब भाँति विमल मति॥५०॥
लीला वर्णन माहिं भयो हमसे अपराधा।
सो सब कीजिए क्षमा आप को हृदय अगाधा॥५१॥
मम हिय को सिद्धान्त कोटि कमनीय सखिन युत।
सेवित श्री मैथिली रूप अति अकथ सु अद्भुत।५२॥

तिन सँग रसिक नरेश प्राण जीवन धन प्यारे ।
करत केलि कमनीय रास रसिया सुकुमारे ॥५३॥
सादर प्रेम समेत सतत उनको हिय ध्याना ।
परम रास रस मगन करब अति सुख प्रद माना ॥५४॥
क्योंकि सकल तिय वृन्द परम रमणी गुण आगरि ।
सुठि श्रृँगार के योग्य रूप मन हर रस सागरि ॥५५॥
हस्त पाद मुख आदि इन्द्रियाँ सुभग चतुर्दश ।
जो पिय को अति सुखद करत रसिकेशहिं निज वश ॥५६॥
राग द्वैष इर्षादि परस्पर सकल बिहाई ।
सन्तत भरि अनुराग सुसेवत सिय रघुराई ॥५७॥
वैसे ही श्रीराम कोटि कन्दर्प दर्प हर ।
अनुपम सुषमा गार सार सौन्दर्य्य सिन्धु वर ॥५८॥
रति रस रमण विहार भोक्तन माहिं श्रेष्ठ तम ॥
सबसे प्रमुख महान रमण कर्ता अति अनुपम ॥५९॥
श्री साकेत प्रसिद्धि नाम श्री राम पुरी प्रिय ।
भरी परम ऐश्वर्य लखत सर्वदा विमल हिय ॥६०॥
ब्रह्मलोक से ऊर्ध लसत ब्रह्माण्डन ऊपर ।
सत चित आनँद रूप अकथ अनवद्य अमल वर ॥६१॥
तहँ बिलसत रसिकेश श्याम सुन्दर श्रीरामा ।
रूप अनूप उदार शील सुषमा सुख धामा ॥६२॥
अज अनन्त अनवद्य अमल अविगत अविकारी ।
परतम परम परेश प्रेम पूरक धनु धारी ॥६३॥

परम स्वतन्त्र समर्थ सकल प्रेरक अविनासी ।
सतत प्रेम परतन्त्र अखिल जीवन उरवासी ॥६४॥
व्यापक व्याप्य विभूति वदत वर विबुध वेद विद ।
कृपा सिन्धु कमनीय केलि क्रीड़ारत सतचिद ॥६५॥
जाकी कृपा कटाक्ष पाय नाचत नित माया ।
प्रगटत विनसत निमिष माहिं ब्राह्मण्ड निकाया ॥६६॥
सब ईशन के ईश चतुर्विंशत अवतारा ।
जासु अंश ते होत करत जग सार सँवारा ॥६७॥
कोटिन ब्रह्मा विष्णु शम्भु जाके पद ध्यावत ।
लोकपाल यमकाल देव नर नित यश गावत ॥६८॥
निज परिकर गण सङ्ग प्रेमरस पगे कृपाला ।
करत चरित अति मधुर सुखद मन हरन रसाला ॥६९॥
विद्यमान रहि सतत तहाँ रसिकेश सुघर वर ।
वहाँ निवासी जीव तिनहिं रक्षत सनेह भर ॥७०॥
कहि इमि सूत सुजान करत स्तुति सिय वर की ।
जय जय करुणा कन्द द्वन्द हर राम कुँवर की ॥७१॥
जय हे श्री नरभद्र जयति हे रामचन्द्र जय ।
अमृतेश रसिकेश आप की सदा जयति जय ॥७२॥
जग रक्षक श्रीराम जनन की रक्षा कीजिय ।
प्रेम पियूष पियाय आपने रँग रँगि दीजिय ॥७३॥
जिस पर करि अति कृपा आप निज दर्शन देवत ।
परम सुयोग्य बनाय सर्वथा निज करि लेवत ॥७४॥

दक्षिण नायक आप कृपा करुणा गुण सागर।
कामिनि काम कलाप केलि पूरक नव नागर ॥७५॥
हे मिथिलेश कुमारि राम प्रेयसी कृपाकर।
जय जय तव सर्वदा मोहिं हेरिये भाव भर ॥७६॥
कीजिय ऐसी कृपा रावरे चरण कमल में।
हो मम श्रद्धा शुद्ध नित्य नव नेह अमल में ॥७७॥
आदर युत सर्वदा करौं मैं सुठि सेवकाई।
करुणा मयि मैथिली करिय अस कृपा सदाई ॥७८॥
पुनि श्री सूत सुजान बदत वर बचन सुखद वर।
पंच दशं अध्याय युक्त सुठि ग्रन्थ सरस तर ॥७९॥
श्री रघुवीर विलास केलि कमनीय सुहावन।
सज्जन प्रद आनन्द रसिक जीवन मन भावन ॥८०॥
प्रेमिन प्रेमानन्द अमित उल्लास प्रदायक।
होवै यह प्रिय चरित जयति जय श्री रघुनायक ॥८१॥
अब वर्णत श्री व्यास श्रेष्ठ शौनक मुनीश वर।
भार्गव कुल उत्पन्न ब्रह्म वेत्ता उदार उर ॥८२॥
तिन ने यहि विधि केलि कलित श्रीराम कुँवर की।
सादर सुनी सनेह सहित सिय वर छविधर की ॥८३॥
कियो यथोचित भाव भरित सत्कार अमित वर।
दै बहु भूषण बसन सुआशिर्वाद मोद भर ॥८४॥
मङ्गल विपुल मनाय कियो पूजन हर्षाई।
पुनि कीनी वर विनय सूत से भाव समाई ॥८५॥

हमने सर्व पुराण सकल संहिता श्रवण कर।
आपहि से हे नाथ लह्यो आनन्द अमित वर ॥८६॥
पर ऐसी दृढ़ प्रीति अपर में भई न हे प्रभु।
जस यह सुनत रहस्य चरित हे नाथ आप विभु ॥८७॥
यह निर्हेतुक कृपा आप की हे मुनीश वर।
जय जय हो तव सतत परम रस विज्ञ नेह घर ॥८८॥
सुनि यह रहस चरित्र कथा कमनीय मधुर तर।
मम हिय बसे किशोर युगल चित चोर मोद घर ॥८९॥
जब ते प्रिय पियूष रहस रस भरित चरित्रा।
भयो श्रवण गत मोर परम मन रमण पवित्रा ॥९०॥
तब ते कृपा समुद्र भक्त वात्सल्य समाने।
तजत न मम हिय कुंज रसिक मणि हिय ललचाने ॥९१॥
श्री मैथिली समेत कोटि कमनीय तियन सँग।
विहरत रहत सदैव प्राण वल्लभ सनेह रँग ॥९२॥
याही ते अनुमान करति यह बुद्धि हमारी।
यह चरित्र कमनीय परम सब ते सुखकारी ॥९३॥
क्योंकि मोर मन चपल स्वगति सर्वथा त्याग कर।
पागत परमानन्द सहित यहि में उमङ्ग भर ॥९४॥
कारण यह कल केलि मनोरम परम सु अद्भुत।
रसिक राज शिरताज मैथिली विपुल सखिन युत ॥९५॥
श्रवण सुखद मनहरण परम पावन पियूष सम।
यह प्रिय रहस चरित्र मधुर मंजुल अति अनुपम ॥९६॥

याही से रसिकेश राम अभिराम उदारा ।
सब से पर तर पूर्ण ब्रह्म सब जगत अधारा ॥९७॥
मानव संज्ञा प्राप्त अहैं जग में नर जेते ।
सुनि यह चरित रसाल परम रस पइहैं तेते ॥९८॥
पर जे पशुवत मनुज कहे को उनकी बाता ।
जो निशिदिन पर द्रव्य अपर तिय लखि ललचाता ॥९९॥
हरण करण हित वाहि करै कर्तव्य कठिन तर ।
तिनकी चर्चा त्याग भजिय सर्वदा सिया वर ॥१००॥

दोहा:—जे पशुवत आचरण रत, विचरत विश्व मझार ।
सीताशरण न तिनहिं प्रिय, यह चरित्र सुख सार ॥१०॥

यह चरित्र सुख सार रसिक जन जीवन प्राना ।
याको शेश महेश रमेसहु सन्तत गाना ॥ १ ॥
करत हृदय हर्षाय गुनत आपन बड़ भागा ।
पावत परमानन्द पगे नित अति अनुरागा ॥ २ ॥
निज मन केर विचार कहौं मैं सबनि सुनाई ।
यह कमनीय रहस्य चरित सुनि नहिं हर्षाई ॥ ३ ॥
सो नर परम कठोर कठिन माया प्रभु केरी ।
बंचन करि सब भाँति दीन वाकी मति फेरी ॥ ४ ॥
सो अति हेय विचार पापमय विग्रह वाको ।
सङ्ग न कबहूँ करै नाम नहिं लेवै ताको ॥ ५ ॥
अरु जो भक्ति समेत भाव भरि गावत गाथा ।
जिनको अति प्रिय लगत रसिक जीवन सिय नाथा ॥ ६ ॥

अथवा भरि अनुराग श्रवण कर यह चरित्र वर।
पावै परमानन्द स्वाद सुठि हृदय विमल तर ।। ७ ।।
बड़ भागी ते सकल युगल पद पंकज प्रेमा।
वे निश्चय पाइहैं सुनै नित कर दृढ़ नेमा ।। ८ ।।
इन्द्रादिक सुर निकर तासु कल कीरति गावहिं।
सुख युत जन्म विताय नित्य साकेत सिधावहिं।। ९ ।।
जिनहिं न प्रिय सियराम न्युन तर जिनको भावा।
मुख न लखै तिन केर न मानत राम प्रभावा ।।१०।।
भूलि न सङ्गत करै होय किन सर्वस नाशा।
उदासीन बनि रहै त्यागि क्रूरन की आशा ।।११।।
उन से भल न विरोध प्रेम भी करै न कबहूँ।
आवैं यदि वै निकट करै व्यवहार न तबहूँ ।।१२।।
श्रीमद्सूत सुजान परम प्रिय भक्त राम के।
कृपा पात्र सब भाँति मधुर रस रति सुधाम के ।।१३।।
हम सब के बड़भाग्य कृपा कर यहाँ पधारे।
सबहिं कृतारथ कीन कहे प्रभु चरित पियारे ।।१४।।
सीताराम चरित्र अमल अद्भुत अति पावन।
जो शिव को सर्वस्व शेश शुक मुनि मन भावन ।।१५।।
सो इन के मुख कंज मंजु से अति प्रिय लागा।
यह सिय वर प्रिय भक्त अमल प्रभु पद अनुरागा ।।१६।।
यह कमनीय रहस्य परम रमणीय सुधा सम।
दायक परमानन्द प्रेम वर्धक उदार तम ।।१७।।

श्रवण वाहिसे करिय होय प्रभु पद अनुरागी।
वहही वक्ता योग्य वही अतिसय बड़भागी ।।१८।।
जिनको श्री मैथिली रमण में प्रेम न होई।
उनसे यह प्रिय चरित सुनिय नहिं हो किन कोई ।१९।।
प्रीति बिना नहिं बनत कहव यह रहस विचित्रा।
यह प्रेमिन सर्वस्व अहै रस सिन्धु पवित्रा ।।२०।।
अब हे कृपानिधान परम प्यारे सियवर के।
वर्ष चतुर्दश सहस अवध निवसत छवि धर के ।।२१।।
अथवा कछु दिन रहे विपिन में सोउ चरित्र वर।
करके कृपा अपार सुनाइय हमन मोद भर ।।२२।।
किमि गमने बन माहिं कवन विधि विपिन मझारी।
विहरण किये रशेश राजनन्दन मनहारी।।२३।।
कवन कवन मुनि मिले कियो सत्कार कवन विधि।
केहि विधि बाँध्यो सेतु जीति लंकादि विजय सिधि ।।२४।।
पाई किमि रघुवीर श्याम सुन्दर रघुनन्दन।
करि रण क्रीड़ा कलित वध्यो दश मुख जगवन्दन ।।२५।।
बहुरि राज अभिषेक भयो सो वर्णि सुनाइय।
करुणानिधि करि कृपा कथामृत पान कराइय ।।२६।।
जिमि कोइ अमृत पान करन से तृप्ति न पावत।
तैसेहि यह प्रिय चरित सुनव हमको अति भावत ।।२७।।
होत न कबहूँ तृप्त कबहुँ मन नहिं अकुलावत।
ज्यों ज्यों पीवत कथा सुधा त्यों नव रस आवत ।।२८।।

पुनि रसिकेश उदार राम रघुनन्द द्वन्द हर।
चित्रकूट शुचि सरस सुथल वन विहरि सु छविधर।२६॥
कीनी जो कल केलि परम रस लम्पट मन हर।
जीवन धन हृदयेश रसिक चूड़ामणि मुद भर॥३०॥
सो सब हे मुनिराज कृपा कर बहुरि मुनीशा।
दीजिय हमनि पियाय दया निधि परम गरीशा॥३१॥
हम सब श्रद्धा युक्त भक्त श्री राम सिया के।
चाहत नित यहि भाँति सुनव नव चरित पिया के॥३२॥
यहि विधि जब वर विनय कीन शौनक मुनि ज्ञानी।
परमानन्द समाय वदत श्री सूत सुवानी॥३३॥
हे शौनक मुनिराज आदि सब विपुल ऋषीशा।
होवै अति कल्याण सबन को मोर अशीशा॥३४॥
जेहि से तुम सर्वदा सुनन को सिय पिय गाथा।
अति उत्कण्ठित रहो भजत नित सिय रघुनाथा॥३५॥
जो सिय राम चरित्र सुनत नित नवल पवित्रा।
लहत न कबहूँ तृप्ति बढ़ति नव प्यास विचित्रा॥३६॥
वे ही भाजन भाग्य केर कल्याण लहत अति।
सबसे उत्तम वही सतत जाकी निर्मल मति॥३७॥
यह प्रिय परम पियूष माहिं अवगाहत निशि दिन।
ध्यावत सीताराम चरण जो नित प्रसन्न मन॥३८॥
पावत सिय पिय प्यार परम पियूष समाना।
लहत नित्य साकेत नित्य कैङ्कर्य सुजाना॥३९॥

वाके चरण सरोज माहिं हिय लहि अभिरामा ।
पुनि पुनि "सीताशरण" करौं शत कोटि प्रणामा ॥४०॥
वाकी कीरति कलित त्रिदेवहु निशिदिन गावत ।
ताकी महिमा कहत स्वयं सिय पिय सकुचावत ॥४१॥
श्री सद्गुरु हनुमन्त सन्त सिय कन्त कृपा कर ।
करवायो यह ग्रन्थ पूर्ण रस पन्थ बोध कर ॥४२॥
श्री साकेत निकुन्ज मध्य मङ्गल मङ्गल कर ।
प्रिय बसन्त पंचमी सकल रसिकन प्रमोद कर ॥४३॥
सम्वत युगल सहस्त्र षष्ट विंशति अति पावन ।
मकर मास मन रमण रसिक हिय मोद वढ़ावन ॥४४॥
सीताराम सुनाम मधुर मंजुल पियूष सम ।
ताकी सुध्वनि रसाल होत मन हर अति अनुपम ॥४५॥
भक्ति भावना भरे भक्त अनुरक्त अधिकतर ।
पियत अखण्ड सुनाम सुधारस उर उमङ्ग भर ॥४६॥
मध्यगमन गत भानु होन चाहत जेहि अवसर ।
तब पूरण भो ग्रन्थ प्रेमरस पन्थ प्रबल कर ॥४७॥
कीनी कृपा कटाच्छ कृपा सुख सिन्धु युगल वर ।
गुन शीला सर्वस्व प्राण जीवन सनेह घर ॥४८॥
यह रसिकन प्रद मोद ग्रन्थ सम्पूर्ण करायो ।
परम रुच्छ हिय माहिं मधुर रस सिन्धु भरायो ॥४९॥
श्री अनन्त सम्पन्न जानकी शरण मधुर तर ।
नाम सरस सुख करण भरण हिय में सुभाव वर ॥५०॥

जिन करि कृपा अपार दीन जन को अपनायो।
मोद सहित मम हाथ सिया रघुवरहिं धरायो ॥५१॥
करवायो सम्बन्ध अचल लाड़िली लाल से।
राखि लियो गहि बाँह परम भव सिन्धु जाल से ॥५२॥
निज स्वरूप को बोध दया निधि हृदय करायो।
विषम अविद्या ग्रसित बुद्धि मन मोह मिटायो ॥५३॥
नाशे सब भ्रम जाल लाड़िली लाल केलि कल।
सरस सिन्धु लहराय दियो हिय में उदार भल ॥५४॥
नाशे सब सन्देह नेह नव अमल हिया में।
दीजिय अब करुणेश कृपा कर सीय पिया में ॥५५॥
हे सद्गुरु सुख कन्द द्वन्द हर विमल ज्ञान घन।
दीजिय सीताशरण युगल पद प्रेम मुदित मन ॥५६॥
जयति मैथिली मंजु सजीवनि मूरि हमारी।
जय जय सीताशरण प्राण धन रास विहारी ॥५७॥
जयति लाड़िली मोर परम चित चोर पिया की।
जय जय सीताशरण प्राण जीवन रसिया की ॥५८॥
जयति स्वामिनी सीय जयति रसिकेश हृदय हर।
जय जय सीताशरण रसिक सुख प्रद प्रमोद कर ॥५९॥
जयति किशोरी कलित जयति अवधेश कुँवर वर।
जय जय सीताशरण रसिक वल्लभ सनेह घर ॥६०॥
जय जय सिय सुकुमारि प्यार पूरित रस पूरी।
जय जय सीताशरण देहु नित निज पग धूरी ॥६१॥

जय जय रसिक नरेश प्राण वल्लभ रस दायक ।
जय जय सीताशरण प्रेम लम्पट नव नायक ॥६२॥
जय जय श्री मैथिली मंजु मूरति मन हरनी ।
जय जय सीताशरण पिया हिय मैं रस भरनी ॥६३॥
जय जय प्राण अधार परम रिझवार नेह घर ॥
जय जय सीताशरण प्रिया परतन्त्र अमल तर ॥६४॥
जय जय श्री लाड़िली कृपा की मूरति जय जय ।
जय जय सीताशरण गौर सुठि सूरति जय जय ॥६५॥
जय जय श्याम सरोज गगन इव सुन्दर जय जय ।
जय जय सीताशरण मधुर तर मनहर जय जय ॥६६॥
जय जय करुणाखानि परम रस दानि जयति जय ।
जय जय सीताशरण प्रेम रस पूरित जय जय ॥६७॥
जय जय रसिक नरेश प्राण जीवन प्रिय जय जय ।
जय जय सीताशरण सनेही शुचि हिय जय जय ॥६८॥
जय जय विपिन प्रमोद मध्य मंजुल मन भावन ।
जय जय रासविलास मगन सिय पिय रस छावन ॥६९॥
जय जय सरयू सरित भरित सिय पिय सनेह रस ।
जय जय सीताशरण अमल अनवद्य विशद यस ॥७०॥
जय जय अवध अनूप रूप रस सागर मनहर ।
जय जय सीताशरण रसिक रस प्रद उदार तर ॥७१॥
जय जय कनक निकुंज पुंज रस पूरित सुठि तर ।
जय जय सिय पिय केलि सुथल रमणीय सुखद वर ॥७२॥

जय जय नव नायिका नवल सिय पिय रस पागीं।
जय जय रास विलास उमङ्गित अति अनुरागीं ॥७३॥
जय जय वर विधु विमल वदनि वर वयनी वाला।
जय जय सीताशरण मधुर मन हरनि रसाला ॥७४॥
जय जय मिथिला धाम परम अभिराम उदारा।
जय जय कंचन विपिन रसिक रस वर्द्धन हारा ॥७५॥
जय जय कमला सुतट निकट जहँ नित प्रमोद पगि।
जय जय विहरत सतत प्रिया प्रीतम सनेह रँगि ॥७६॥
जय जय कामद कुंज पुंज रस भरित सुथल वर।
जय जय सीताशरण सतत रसिकन प्रमोद कर ॥७७॥
जयति लाड़िली लाल ललित लीला प्रिय हिय हर।
जय जय नाम नरेश नेह पूरित उदार तर ॥७८॥
जय जय सीताराम नाम अभिराम प्रदायक।
जय जय अकथ अपार महा महिमन सब लायक ॥७९॥
जय जय सुगम सनेह सने सब दिशि सब काला।
जय जय सीताशरण मधुर तर परम रसाला ॥८०॥
जयति अनन्त अमोघ सकल अघ ओघ हरन जय।
जय जय जापक जनन हृदय रस पुंज भरन जय ॥८१॥
जयति सतत सर्वदा सबन को सब सुख दायक।
जय जय नाम नरेश देश दर्शक सब लायक ॥८२॥
जयति मैथिली सहित मंजु मोहन रघुराई।
जय जय रसिक रसेश राजनन्दन सुखदाई ॥८३॥

जयति मैथिली मंजु मदन मर्दन मन हर पिय।
जय जय निज वश करनि तिनहि अतिसय उदार हिय ॥८४॥
जयति अवध नृप ललन ललित ललनन रस पागे।
जय जय सीताशरण मन्द हँसि सिय हिय लागे ॥८५॥
जयति कौशिला अम्ब हृदय आनन्द कन्द वर।
जय जय श्री कैकई सुमित्रा हिय सनेह भर ॥८६॥
जयति युगल चित चोर मोर हिय कुंज निवासी।
जय जय सीताशरण नवल नित रास विलासी ॥८७॥
जयति युगल सरकार प्यार पागे सु कण्ठ लगि।
जय जय सखिन सनेह सने सर्वदा रङ्ग रँगि ॥८८॥
जयति नवल दोउ छैल छके रस बश सुख सागर।
जय जय सीताशरण रसिक वल्लभ नव नागर ॥८९॥
जयति मधुर रस रमण रास रसिया सिय प्यारे।
जय जय रसिक नरेश नृपति नैनन के तारे ॥९०॥
जय जय विपिन प्रमोद मध्य नटवर नव नागर।
जय जय सखियन सङ्ग रङ्ग रँगि रूप उजागर ॥९१॥
जय जय रास विलास पगे सिय युत सनेह घर।
जय जय सीताशरण हृदय मन्दिर विहार कर ॥९२॥
जय जय अकथ अपार अमित महिमा युत सुठि थल।
श्री साकेत निकुंज पुंज रस भरित सुखद कल ॥९३॥
जयति युगल मनहरन मधुर मूरति पिय प्यारी।
जय जय श्री मैथिली जयति जय रास विहारी ॥९४॥

जयति परम परतत्व परम गति परम प्रकाशी।
जय जय परमानन्द कन्द हिय कमल विकाशी ॥९५॥
जयति प्रेम पथ प्रबल परम प्रणयी प्रवीण तर।
जय जय श्री मैथिली मंजु मृदु तर सुशील वर ॥९६॥
जयति सुधा सम सुखद सतत हित रत सबही के।
जय जय जीवन नाथ परम प्रिय अतिसय जी के ॥९७॥
जयति युगल मनहरन सिया सिय वल्लभ सुख कर
जय जय सीताशरण प्यार वर्द्धक उदार तर ॥९८॥
जयति अमल आनन्द कन्द सच्चिदानन्द वर।
जय जय सीताशरण रसिक रस प्रद प्रमोद कर। ९९॥
जयति प्रेम रस पगे परस्पर गल भुज धारे।
जय जय सीताशरण मन्द हँसि हेरन हारे ॥१००॥

दोहा—जयति जयति करुणानिधे, सद्गुरु देव ऊदार।
जय जय शीताशरण मम जीवन प्राण अधार ॥11॥अ-1

युगल रहस्य सु माधुरी मंजुल मधुर विलास।
पूरण सीताशरण भो सद्गुरु कृपा प्रकाश ॥११॥ब॥२॥
मधुर पंच दश अति सुखद प्रिय अध्याय अनूप।
लिखवाये सीताशरण सिय पिय युगल स्वरूप॥ ११॥स-३
जो पढ़िहैं सुनिहैं सतत सादर भाव बढ़ाय।
सो निश्चय सीताशरण युग पद प्रेमहिं पाय ॥११॥ह-४
नित्य धाम साकेत में नित सिय पिय के सङ्ग।
करिहै केलि कलोल नव हिय में भरित उमङ्ग ॥११॥५॥

नित्य सरस कैङ्कर्य करि परमानन्द समाय ।
अवसहिं सो सीताशरण नित्य मुक्त हो जाय ।।११।।६।।

नित श्री सीताराम पद, पूजैं मोद समेत ।
पिय प्यारी परिकरन सँग, बसैं नित्य साकेत ।।

नित्य नवल अति अमल पिय, चरित लखैं सुख रूप ।
"सीराशरण" सनेह सनि, सेवैं सिय पिय भूप ।।

इति श्री युगल रहस्य माधुरी विलासे
बसन्त ऋतु श्रीराम रासे
"सीताशरण" सुमति प्रकाशे
नागकन्या रास प्रकणम्
पंचदशोऽध्यायः
सम्पूर्णम्स्तु

卐